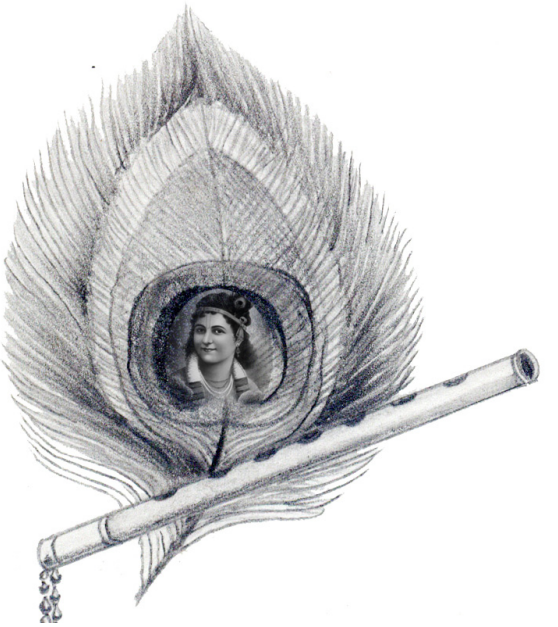

मेरी आँख देखे तो देव को

मेरी आँख देखे तो देव को, मेरे कान सुनें तो राम को।
मेरे हाथ छुएँ तो राम को, मेरे पाँव चलें तेरे धाम को।।

कौन मित्र या अरि मेरा, सब ओर खड़ा है हरि मेरा।
को' अपना पराया है मेरा, जब सब जहान प्रभु है तेरा।।

कोई और मिले अब चाह नहीं, इच्छा चाहना कोई बाक़ी नहीं।
तुझे राम मैंने है देख लिया, अब बाक़ी रही कोई झाँकी नहीं।।

किस से अब मैं व्यापार करूँ, और किस से मैं व्यवहार करूँ।
जो है सब तू है राम मेरे, कोई अन्य नहीं किसे क्या कहूँ।।

विषय भी तू और राम भी तू, उस में भी कोई भेद नहीं।
गर राम यह अनुभव हो जाये, तो रहेगा कोई खेद नहीं।।

'श्रीमद्भगवद्गीता' अध्याय ६/३१

अनुक्रमणिका

३. '...बाह्य स्थित हैं गुरु मेरे, आंतर्मुखी वह करते हैं...'
सुश्री छोटे माँ

८. नित्य आराधना हुआ करे!
'मुण्डकोपनिषद्' में से

१३. ऐसा देखा है प्यार, जो कुछ भी माँगता नहीं...
श्रीमती पम्मी महता

१८. जो तुधु भावै साई भलीकार।
अर्पणा प्रकाशन 'जपु जी साहिब' में से

२४. अपने तन को 'मेरा नहीं' जान कर, औरों को दे दो...
अर्पणा प्रकाशन 'श्रीमद्भगवद्गीता - भगवद् बाँसुरी में जीवन धुन' में से

२८. 'मन्त्र का प्रमाण फिर, तुम आप ही हो जावो।'
पिताजी के साथ पूज्य माँ के अलौकिक संवाद

३३. 'सद्गुरु तत्त्व'
डा.जे.के महता

३७. अर्पणा समाचार पत्र

सम्पादक की ओर से

गद्य में प्रस्तुत सभी लेख साधकों के प्रश्नों के उत्तर में परम पूज्य माँ द्वारा प्राप्त सत्संगों पर आधारित हैं और संकलन-कर्ता की निजी समझ के अनुकूल हैं। काव्य की पंक्तियाँ पूज्य माँ के मुखारविंद से प्रवाहित दिव्य प्रवाह का अंश हैं; जिसे सुश्री छोटे माँ ने लेखनी बद्ध किया है। अपनी पूर्ण सामर्थ्य के अनुसार उसे ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुति में किसी भूल के लिये हम क्षमा प्रार्थी हैं।

सम्पादक : *पूनम मलिक*
सह सम्पादक : *श्रीमती साधना पाल*

पता : अर्पणा आश्रम, मधुबन, करनाल
१३२ ०३७, हरियाणा, भारत

श्री हरीश्वर दयाल, अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन, करनाल १३२ ०३७ ०१, हरियाणा द्वारा २६ अगस्त २०१४ को प्रकाशित तथा सोना प्रिन्टर प्राईवेट लिमिटेड, एफ-८६/१, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज़-I, नई दिल्ली ११० ०२० द्वारा मुद्रित

'...बाह्य स्थित हैं गुरु मेरे, आंतर्मुखी वह करते हैं...'

सुश्री छोटे माँ

परम पूज्य माँ, पूज्य छोटे माँ के लिए दीप प्रज्वलित करते हुए...

गुरु का धरती पर आगमन सच्चे भक्त की पुकार का परिणाम होता है। सच्ची पुकार के फलस्वरूप ही तो वह धरती पर साधारण रूप में आते हैं। गुरु के धरती पर आने का प्रसाद भी राम जी की कृपा से ही प्राप्त होता है। वह ऐसे प्रत्यक्ष प्रमाण का रूप धारण करते हैं कि कोई उन्हें पहचान ही नहीं पाता। वह तो 'दासों के दास' होते हैं।

इस जीवन में हम पर भी अतीव कृपा हुई है, जिसका प्रसाद आजीवन ही मिलता रहा। सत्युग में तो लगभग सभी प्राणी इस रंग में ही रंगे मिलते थे। अब तो हम कलियुग में हैं, जहाँ पर तो हम इनसानियत को पूर्णतया भूल ही गये हैं। इस विषय पर सोच कर ही मन कांप उठता है कि ऐसे घोर कलियुग में हमारा जन्म हुआ है। न जाने हमारे कौन से पुण्य कर्मों का फल होगा कि हम परम पूज्य माँ की शरण में आ गये!

परम पूज्य माँ के तथाकथित साधना काल के प्रारम्भक में एक लड़की, जिसे हम 'बीबा' कह कर बुलाया करते थे, परम पूज्य माँ के सम्पर्क में आई। उसने एक बार परम पूज्य माँ को पत्र लिखकर आग्रह किया, 'मैं आपको गुरु धारण करना चाहती हूँ।' इसके प्रत्युत्तर में पूज्य माँ का प्रवाह बह निकला -

"स्वयँ बैठी पुकारती हूँ, अखियन् बहता नीर।
अपना मन निश्चल नहीं, क्या बँधाऊँ धीर।।

राम राम कहा करूँ, ओम्कार सतनाम।
चित्त में चैना तो पाऊँ, आन मिलें जब राम।।

गुरु बनन् के योग्य नहीं, जानूँ नाहिं राह।
तू भी कर को जोड़ कर, राम द्वारे जा।।

मन बैरी हिला नहीं, मनका गया घिस्सा।
मन निश्चल तब होवहुँ, जब राम करें कृपा।।"

२ अक्तूबर, १९५८

इस दिव्य प्रवाह को जब प्रथम बेला सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ तो मैं इसे केवल मात्र कविता ही समझी, इसका रहस्य न समझ पाई। पसंद तो बहुत आई और यही कहती रही कि भाव बहुत सुन्दर हैं!

आज जब पीछे मुड़ कर पूज्य माँ के जीवन को देखते हैं तो रहस्यात्मक रस का प्रसाद मिलता है। भगवान जी की अपार कृपा है। आदि परम गुरु के रूप में, परम पूज्य माँ प्रमाण देकर, पूर्ण जीवन हम जैसे मूढ़, अज्ञानी तथा आसुरी भावों से भरपूर लोगों के साथ व्यतीत करते रहे। धन्य हैं हमारे आदि गुरु, जिन्हे वर्णन में लाना भी कठिन ही प्रतीत होता है। क्यों न कहें, परम पूज्य माँ की ही वाणी में -

परम की करुणा प्रतिमा, गुरु आगमन होती है।
आत्म स्वरूप प्रथम दर्शन, गुरु कृपा ही होती है।।

प्रेम विह्वल हो राम भक्त, राम को जब पुकार ले।
राम गुरु बन दर्शन दें, राम को वह निहार ले।।

परम कृपा की मूर्त बन, गुरु देख आ जाते हैं।
मनो वाँछित परम दर्शन, वा में साधक पाते हैं।।

गुरु का दर्शन जिस पल हो, सीस वहीं पे झुक जाये।
दर्शन मात्र से अंग अंग, चरणन् में वा बिछ जाये।।

मैं अज्ञानता के वशीभूत हुई यही समझती रही कि मैं परम पूज्य माँ को भली प्रकार से

जानती हूँ। इसी का ही प्रचार भी वर्षों तक करती रही। पर कई बार मन में सन्देह भी उठ जाता, 'क्या मैं उन्हें जानती हूँ?' मन पावन ही नहीं हुआ, इस कारण जानने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। जब कभी प्यार में आकर कह भी देती कि 'मैं आपको जानने लगी हूँ,' तो इस पर कभी-कभी परम पूज्य माँ दर्शन करवा देते और हँस कर यह वाक् कह देते, 'तुम इतना गुणगान तो कर रहे हो, परन्तु कोई गुण भी तुझे पसंद नहीं आया, जिसका रंग चढ़ जाये!'

तब थोड़ी देर के लिये मन सोच में पड़ जाता। इस बात की सत्यता का प्रमाण हमारे जीवन में तो कहीं मिलता ही नहीं। परम पूज्य माँ की ही वाणी में इसका भी उत्तर मिल जाता है -

...बाह्य स्थित हैं गुरु मेरे, आंतर्मुखी वह करते हैं।
आंतर में वह बैठ करी, भाव प्रवाहित करते हैं।।

परम की ओर वह लिये चलें, शिष्य जाने न जाने।
श्रद्धा का ही कर्म है यह, मन माने या न माने।।...

पूज्य छोटे माँ ने ही परम पूज्य माँ के सम्पूर्ण दिव्य प्रज्ञा प्रवाह को लेखनीबद्ध किया।

याद आता है कि जब मैं जालंधर में माँ के पास आ गई, उस समय मैं तो यही कहा करती थी कि 'पूज्य माँ मेरे गुरु हैं।' साथ-साथ यह भी कहती थी कि, 'वह मुझे बहुत प्यार करते हैं।' परन्तु मेरे लिए उस प्यार की तुला क्या थी? जब तक ज्ञान की चर्चा होती रहती थी, वह ज्ञान सुनना बहुत अच्छा लगता था। तब तक पूज्य माँ के प्रवाह को लिखने में खोई रहती थी।

अनुकूल परिस्थितियों में मैं बहुत प्रसन्न रहती। ज्यों परम पूज्य माँ किसी और से बात करते तो मैं भड़क जाती। उस समय परम पूज्य माँ कह देते, 'तुझे जो मिलेगा, वही तेरा हिस्सा है। तेरा हिस्सा कोई भी नहीं ले सकता।' इतनी बात तो मुझे समझ में आ जाती और मैं प्रसन्न हो जाती। लेकिन साथ ही जब यह वाक् कहते, 'इसी प्रकार से दूसरे का भी अपना

हिस्सा है, उसे वही मिलेगा। उसे भी कोई नहीं ले सकता,' तब मैं भड़क जाती। इस पर माँ कभी ख़ामोश रह कर अथवा कभी मुझे समझा कर तथ्यों से अवगत करवा देते।

आदि गुरु परम पूज्य माँ ने, हर प्रकार से, चाहे मैं जो भी कहती रही, मेरे हर प्रहार को स्वीकार किया। परन्तु वह सत् पर स्थिर रहे। धन्य हैं माँ! सत् पर स्थिर रह कर मुझे सत् पथ पर ही ले जाते रहे। कभी सत् वाक् से पीछे मुड़े हों, यह नहीं हुआ।

परम पूज्य माँ हर परिस्थिति में - गुरु की उपाधि को एक पल को भी अपनाये बिना - इसी प्रकार से ही वरतते रहे। धन्य हैं माँ! हम चाहे पहचान सके या नहीं, धन्य हैं आपका जीवन!

अब हम उसी ओर चलने का प्रयत्न उन्हीं की कृपा से कर रहे हैं। यदि साधक उनके प्रेम में खो कर, रस की एक बुँदिया भी पान कर लेता है, तो उसका जीवन सफल हो जाता है। पूज्य माँ की ही वाणी में -

रस की बुँदिया एक सही, साधक ने वह पी ही ली।
स्वरूप झलक तो देख ली, चाहे वह क्षणिक ही थी।।

स्वतः ही सीस वा झुक गया, अर्पित चरण में हो गया।
हृदय में गुरु वा आ बैठे, मन शरणापन्न हो गया।।

माँ, हृदय में इसी प्रकार से आप आ जायें, तो जीवन सार्थक हो जायेगा! अब जिस भी शास्त्र को खोलती हूँ तो आपका मार्गदर्शन करवाने वाला संदेश मिल ही जाता है!

पूज्य माँ, मैं तो आपको यह भी कहा करती थी, 'आप जो भी मन्दिर में राम जी के चरणों में पुकारते हैं, यह पूजा की विधि नहीं!' आपने तो मेरी ऐसी अज्ञान भरी बातों को भी स्वीकार कर लिया! माँ, आप धन्य हैं! कोई जैसा भी हो, आप भगवान की देन जान कर उसे गले लगा लेते हैं।

हे माँ, आप परम दयालु, कृपालु हैं! करुणा की प्रतिमा हैं! आपने आदि गुरु का प्रमाण जीवन में दिया है। जब आपके दिव्य बहाव का पठन करती हूँ तो यह वाक् गूँज उठते हैं -

या कहूँ करुणा पूर्ण की, अखियन् का रस पी लिया।
परम सत्त्व अस्मोर्द रस, इक बूँद भर पी लिया।।

अन्य रस उसे क्या भाये, स्वभाव बँधा तन पिये है।
परम भाव जो जाग उठे, वाकी याद में जिये है।।

माँ, हर परिस्थिति में हर प्रकार से बल बन कर, आप ही विराजित होकर सदैव रहते हैं! मेरे जीवन के हर पहलू में, परम पूज्य माँ, जो सच ही आदि गुरु हैं, सदैव चेतन ही रहते हैं। जब जब मन उन्हें पुकार उठता है तो वह दौड़े-दौड़े आते हैं।

मैं तो जीवन के लगभग ५० वर्षों से इन्हीं भावों में रही; कभी कुछ कहती, कभी कुछ कह देती। परन्तु पूज्य माँ तो कभी भी नहीं रूठे। मुझे समझ आये या न आये वह फिर भी उसी प्रकार से मार्गदर्शन करवाते रहे। मुझे तो अपने जीवन के हर प्रकार के कर्म केवल साधारण ही दीखते हैं। परन्तु जो परम पूज्य माँ से, मेरे गुरु से मिला, वह विलक्षण है। उन्होंने जीवन में जीने का मार्ग दर्शाया है।

पूज्य माँ ने हमेशा एक बात कही कि 'दैवीगुण तो केवल विपरीतता में पलते हैं।' यदि मैं अपने आप को याद करूँ तो मेरे पास तो किसी प्रकार के गुण का कण भी नहीं। आज मैं जो कुछ भी हूँ केवल गुरु कृपा से हूँ, माँ ने तो जीवन में मुझे भगवान देन मान कर बस सीस झुका दिया।

धन्य हैं माँ! मैं तो बहुत बार पथ भ्रष्ट भी हुई। कभी मोह से आवृत हुई, कभी संशय भी आया। बस लिखती रहती थी। इसी में मुझे आराम मिलता था। पूज्य माँ मेरे सर्वस्व, मुझे इस जन्म में कैसे मिल गये। कैसे उन्होंने इतनी कृपा करी जो मुझ जैसी पापी को जगा दिया! माँ आप धन्य हैं! सच ही आपके प्रवाह में आता हैं -

समर्पण गुरु चरण में हो, बिन चाहे ही हो जाये।
मनो भाव सब छोड़ करी, एकाकार ही हो जाये।।

एक वृत्ति बस मन में हो, अर्पित चरण में हो जाये।
सेवा नित्य गुरु की हो, मन उस में ही खो जाये।।

बस गुरु कृपा प्रसाद यही है कि वह इतने दयालु होते हैं कि क्षमा कर देते हैं।

माँ तो साक्षात् उस आदि भगवान की प्रतिमा हैं। उन्होंने अपने तन की कभी नहीं सोची। ऐसे दिव्य दर्शन मैंने इस जीवन में पाये हैं।

आज यही कह सकती हूँ -

अज्ञानावरण उठाये जो, गुरु उसे ही कहते हैं।
आपुनो दर्शन जो दे दे, राम उसे ही कहते हैं।।

राम में गुरु में भेद नहीं, गुरु में ज्ञान में भेद नहीं।
आत्म गुरु में भेद नहीं, भावना गुरु में भेद नहीं।।

परम की प्रतिमा भी गुरु है, राम राम तेरा गुरु ही है।
आत्मस्वरूप भी गुरु ही है, परम विश्राम गुरु ही है।।

अर्पणा प्रकाशन - 'प्रज्ञा प्रतिभा' : १२.१.१९६२

आज परम पूज्य माँ के चरणों में यही कह सकते हैं -

'हम ऐसे, तुम ऐसे प्रभु जी।'

माँ आप धन्य हैं, आपको कोटि कोटि प्रणाम! ❖

नित्य आराधना हुआ करे!

- मुण्डकोपनिषद्

परम पूज्य माँ के मुखारविन्द से प्रवाहित संगीतमय काव्य प्रवाह एक दैवी देन है, जो उनके तथाकथित साधना काल (१९५८) से निरन्तर हम जैसे जन साधारण को पावन कर रहा है। श्रीमद्भगवद्गीता एंव मुख्य नौ उपनिषदों का विस्तार भी भक्ति से स्निग्ध सरल भाषा में प्रवाहित हुआ।

उपनिषद् में निहित गुह्य विषय की यह सरल व्याख्या परम पूज्य माँ के निजी अनुभव का शब्दानुबद्ध रूप है। इसकी शैली की सरसता एवं सरलता में उनका आन्तरिक सौन्दर्य प्रतिबिम्बित होता है।

उनके इष्ट श्री 'राम' दशरथ पुत्र राम ही नहीं, बल्कि ब्रह्म हैं जो स्वयं ही सृष्टि के कण कण में व्याप्त हैं। इसी कारण उपनिषदों का विस्तार करते समय स्थान स्थान पर पूर्ण के प्रतीक 'राम' चरण में प्रार्थना और उस की महिमा का गान है।

शान्ति पाठ

ओम् भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाँ सस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः।
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।
ओम् शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

अर्थात् - *हे देवगण! हम भगवान का यजन (आराधन) करते हुए कानों से कल्याणमय वचन सुनें, नेत्रों से कल्याण ही देखें, सुदृढ़ अङ्गों एवं शरीरों से भगवान् की स्तुति करते हुए, जो आयु आराध्यदेव परमात्मा के काम आ सके उसका उपभोग करें। सब ओर फैले हुए सुयश वाले इन्द्र हमारे लिये कल्याण का पोषण करें। सम्पूर्ण विश्व का ज्ञान रखने वाले हमारे लिये कल्याण का पोषण करें। अरिष्टों को मिटाने के लिये शक्तिशाली गरुड़देव हमारे लिये कल्याण का पोषण करें तथा बुद्धि के स्वामी, बृहस्पति भी हमारे लिये कल्याण करें। परमात्मन्! हमारे त्रिविध ताप की शान्ति हो।*

तत्व विस्तारः

जीवन यज्ञ में राम मेरे, सुश्रवण ही अब होये।
सुवचन सुकर्म सुदर्शन ही, अब रे राम होये।।१।।

नित्य यज्ञ तेरा होये, आराधना तेरी हुआ करे।
परम देव तुझ कहूँ, मनन तेरी हुआ करे।।२।।

देवतागण से आज कहूँ, वह भी मेरा साथ दें।
इन्द्रिय देवता को भी कहूँ, संग में आरती तेरी लें।।३।।

मनो देवता इन्द्र को, कहूँ तेरो नाम लें।
अंग अंग यह वृत्ति रे, कहूँ भाव तव चरण धरे।।४।।

कल्याणमय अब श्रवण रे हो, जाने वह श्रवण नाम ही है।
वरेण्यम् वरद्ध बस, जानो तेरा नाम है।।५।।

महा पावनी सुख दायनी, स्वरूप दायनी नाम है।
ज्ञान दायनी नाम दायनी, राम दायनी नाम है।।६।।

बस श्रवण हो मनन हो, कानन राम राम राम सुनें।
हर वचन हो राम का, लब राम राम रे राम कहें।।७।।

नित्य आराधना हुआ करे, नयनों में ज्योति तेरी हो।
जो आकृति देखें कभी, बस प्रतिमा रे तेरी हो।।८।।

नयनन् में हों राम बसे, दृष्टि भी अब राम ही हो।
दृश्य जो सामने देखें हम, दृश्य भी वह राम ही हो।।९।।

माना तव दर्शन न हों, इन्द्रिय गण से तू परे।
पर कहूँ बिनती सुनो, हर इन्द्री तव आरती ले।।१०।।

भद्र सुनें भद्र कहें, भद्र ही देखा करें।
अंग अंग मेरा राम मेरे, राम राम ही कहा करे।।११।।

जितनी आयु तन यह जिये, बस यह तेरा नाम ले।
स्वास स्वास पल पल रे, राम राम बस राम करे।।१२।।

इतनी ही मोरी चाहना है, देवा गण तुझको रे कहूँ।
हे मनोदेव हे श्रवण देव, हे वचन देव मैं तुझे कहूँ।।१३।।

हे नयन देव हे त्वक् देव, हे वचन देव मैं तुम्हें कहूँ।
हे श्रोत देव हे प्राण देव, हे रसना देव लो तुझे कहूँ।।१४।।

बस रे भद्र ही श्रवण हो, बस रे भद्र ही मनन हो।
भद्र ही अब चिन्तन हो, भद्र ही अब वचन हो।।१५।।

पुष्टि अंग की नाम ही हो, वीर्य राम का नाम ही हो।
पाद ताल में झूम उठें, कर का वंदना काम ही हो।।१६।।

सीस झुके और झुका रहे, मन आसन लगा बैठे।
हर वृत्ति हर भाव को, चरणन् में चढ़ा बैठे।।१७।।

बस इतना ही बल हो, नाम मग्न ही रह सकें।
वचन में शक्ति इतनी हो, बस रे राम ही कह सकें।।१८।।

यही बिनती हम लाये हैं, चाहना सफल यह हो जाये।
कोई भक्ति कहे कोई ज्ञान कहे, मेरी साधना सफल हो जाये।।१९।।

बस रे राम का गान हो, राम राम ही हुआ करे।
बार बार वो देवपति, तेरा गान ही हुआ करे।।२०।।

चहुँ ओर विस्तृत हो यश, यह तो अपनी चाह नहीं।
जग से कुछ क्या मुझे मिले, वहाँ पे कुछ रहा नहीं।।२१।।

बस रे राम चाहते हैं, भद्र का अर्थ यह ही है।
सच तो यह मैंने जान लिया, जीवन का अर्थ यह ही है।।२२।।

हर देवता गण तव धूल हो, हर इन्द्री इन्द्री के पति हैं जो।
इन्द्रिय पति के परम पति, तुम ही अब रे क्या करो।।२३।।

सुयश माँगूँ मैं इन्द्र से, आंतर में सुयश यह हो।
नाम गान जब हुआ करे, जानूँ परम यश यह हो।।२४।।

अनुकूल भये यह मन ओ राम, अनुकूल अब तेरा नाम हो।
इन्द्र देव से तुम कहो, नित्य नाम का गान हो।।२५।।

विश्ववेदा तुम ही हो, विश्ववेदा देवा कहें।
सर्वज्ञ तू सर्वज्ञाता, सर्वोपरि सर्वस्थित कहें।।२६।।

ज्ञान स्वरूप रे तुम ही हो, कल्याण तुम ही अब करो।
चरण पड़े रे तुझे कहें, स्वरूप बिना नहीं यह हो।।२७।।

जीवन से रे जो भी कहें, कल्याणकर वह हो जायें।
स्वरूप स्थिति किसी विधि, राम रे अब हम हो जायें।।२८।।

तू सब जानो ईश्वर तू, परमेश्वर भी तू ही है।
महेश्वर तू जगदीश्वर तू, विश्वेश्वर रे तू ही है।।२९।।

तू सर्वपति तू विश्वपति, विश्व रूप रे तू ही है।
तू अखिल रूप सत्त्व रूप, विराट रूप रे तू ही है।।३०।।

तू जाने अपनी लीला, अपनी महिमा जाने है।
क्योंकर कहीं पे क्या होये, पूर्ण ही पहचाने है।।३१।।

कर जोड़े तोरे चरण पड़ूँ, इतनी बिनती ही करूँ।
कल्याणमय रे ज्ञान हो, ज्ञान स्वरूप तुझे कहूँ।।३२।।

अरि दमन सब हो जाये, रुद्र रूप तुम धर आओ।
गरुड़ देव पर चढ़ करी, राम जल्द ही आ जाओ।।३३।।

विघ्न विनाशक बन करके, अरि विध्वंसक हो करके।
मनोवृत्ति अरि भईं, इनके हिंसक हो करके।।३४।।

शीघ्रतम गरुड़ चढ़ी, तुम रे पहुँच ही पावोगे।
कहो कहो कल्याणप्रद, कब रे तुम हो पावोगे।।३५।।

बस रे याचक बन आये, भिक्षुक बन के आये हैं।
परम ज्ञान की पथ रे दे, चरण में सब आये हैं।।३६।।

प्रज्ञा जागृत हो जाये, प्रज्ञापति बृहस्पत् तू।
परम ज्ञान की प्रतिमा रूप में, जाने अब है सम्पत्त तू।।३७।।

बस कल्याण रे जान लो, वृत्ति मौन ही होता है।
तव कृपा से जान लिया, मनो मौन ही होता है।।३८।।

बुद्धि परे तेरा राम है, बुद्धि सों भी दूर करो।
इतनी बुद्धि हो जाये, बुद्धि भाव से दूर करो।।३९।।

ज्ञान रे मुझे है नहीं, ज्ञान की चाहना नहीं।
मुझे तो मिट ही जाना है, मुझे तो ज्ञान पाना नहीं।।४०।।

सत्त्व स्वरूप तू जाने हो, ज्ञान स्वरूप रे तू ही है।
सत्त्व जागृत हो जाये, जागृत रूप भी तू ही है।।४१।।

कल्याणमय यह सब होये, कल्याण बस मेरा तू ही है।
चरणन् में टिका दो मुझे, मेरा पति बस तू ही है।।४२।।

बार बार रे तुझे कहें, परम सत्त्व तुम कृपा करो।
परम जागृति हो जाये, स्वप्न भंजना आप करो।।४३।।

जो नहीं उसे हम सत्य कहें, अनित्य को मिटा ही दो।
परम सत्त्व इनसों परे, परम सत्त्व दर्शा ही दो।।४४।।

बस रे राम राम हो, राम मग्न ही रहा करो।
जब लग एक भी स्वास है, राम राम ही कहा करो।।४५।।

मनो मौन ही हो गये, मौन ही कल्याण है।
देवता गण अब शान्त हो, मौन भये कल्याण है।।४६।।

बस रे हम राम कहें, राम गान ही हो जाये।
देवता गण साथ दें, महा ध्वनि ही हो जाये।।४७।।

तन से मन से परे, बुद्धि परे ही हो जाये।
किससे परे अब कौन होये, जब आप आप ही हो जाये।।४८।।

कल्याण रूपी मैं ही हूँ, भद्र इसी को कहते हैं।
अहम् मौन रे हो जाये, राम इसी को कहते हैं।।४९।।

बस रे इतनी है चाहना, परम में अब खो जायें।
स्वरूप की भी क्या कहें, कहें रे स्थित हो जायें।।५०।।

या कहूँ जो हूँ जो नहीं, वह संग रे छोड़ दूँ।
क्या कहूँ अज्ञान का, आवरण अब तोड़ दूँ।।५१।।

पर यह मेरे बस में नहीं, इन्द्रिय देव अब साथ रे दें।
सर्व देवता गण ओ राम, आरती में जो हाथ रे दें।।५२।।

तब ही समत्व को पा जायें, परम में समा जायें।
अपने धाम को राम मेरे, लौट के राम ही आ जायें।।५३।। ५-८-६१

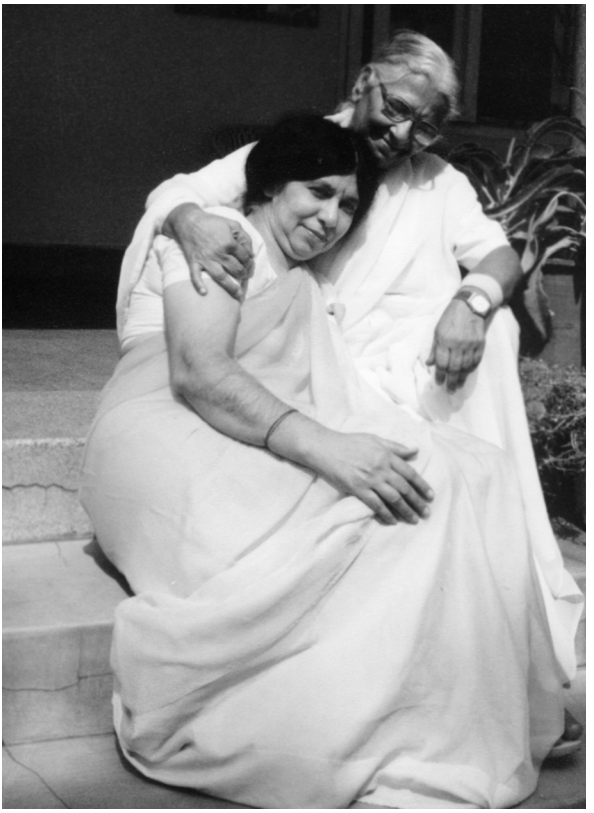

परम पूज्य माँ के साथ श्रीमती पम्मी महता

ऐसा देखा है प्यार, जो कुछ भी माँगता नहीं...

श्रीमती पम्मी महता

एक बरस मईय्या के अंजुमन में और गुज़र गया! यह उपासना का पहलू था। भाव श्रद्धा सों भरी-भरी जाते थे। हृदय उन चरण-कमलों में ही बसा था। माँ ने न जाने अपनी करुणा को किस दृढ़ता से इस आँचल में भरा हुआ था - हृदय में प्रेम और श्रद्धा प्रभु की अपनी ही करुणा का अतीव सुन्दर प्रसाद था जो इन चरणन् में बैठा ली गई थी!

कभी-कभी तो लगता है, मुझमें मेरा कुछ भी नहीं है। सब उस प्रभु का है। और यह हक़ीक़त बहुत स्पष्ट है मेरे सामने... मैं दूर रहती हूँ, इसलिए भावों को इन श्री चरणन् में बहा ले जाने की असीम कृपा मईय्या ने की। कैसा सुखद व फलदायक प्रसाद प्रभु ने दिया! एक पल को भी उठने नहीं दिया उस अनन्त के क़दमों से! उन चरणों में बैठते ही अखण्ड मौन की मौन समाधि टूटी और एक आवाज़ उठने लगी - वह मौन ही की आवाज़ थी। हर पहलू में भगवान का, उनके चरणों का, पदार्पण होने लगा।

उस आनन्द के चहूँ ओर दर्शन होने लगे। इसे व्यक्त कर पाऊँगी शब्दों में... बहुत ही नामुमकिन सी बात लगती है। मगर प्रभु के चरणों में जब बैठा ही ली गई तो भगवान स्वयं ही स्वयं को reveal (प्रकट) करने लगे। मेरा हृदय इस प्यार पे छलका हुआ था। मेरा रोम-

रोम प्रभुमय हुआ हुआ था। कैसा सुन्दर था, प्रभु का यह प्राकट्य!! जिसे निहारते-निहारते अखियाँ थकती ही नहीं। जिसे देख-देख कर बार-बार देखते रहने को जी करता है। भगवान अपने चरण-कमलों से प्रीत बढ़ाने के लिए हर पहलू सों उतर आते हैं। ऐसे प्रसाद तो जीव को माटी बन जाने के लिए प्रभु देते हैं।

प्रभु अपने दिव्य दर्शन सों नवाज़ते हैं बहुत आहिस्ता-आहिस्ता। प्यार का अस्तित्व ही वास्तविक अस्तित्व है। उस प्यार की कह रही हूँ जो भगवान का नाम है। जहाँ से अनन्त की करुणा, क्षमा, दया, आर्जवता, वफ़ा, विशालता, पावनता, सरलता, कोमलता, गुणातीतता, कर्मतीतता, उदासीनता एवं न जाने ऐसे कितने ही अनन्त गुणों का प्राकट्य व उसका बहाव बहे जा रहा है। इस मौन का इतना मन को विभोर कर देने वाला प्रसाद पा धरती पे बार-बार माथा टेक लेती।

उनके क़दमों की यह धीमी-धीमी चाप सुन, मैं वहीं खो के, उसी में डूब के रह जाती। प्रभु के यह दर्शन, महसूस कर पाने की हद से भी कहीं आगे पहुँच चुके थे। उन्हें व्यक्त कर पाने में बहुत ही विवश महसूस कर रही हूँ। माँ ठीक कहते हैं, 'प्रभु के गुण अव्यक्त होते हैं। प्रकट में दिखाई नहीं देते।' मगर यह भी सच है कि उनके क़दम इतने स्थाई होते हैं कि उन्हें झुठलाया नहीं जा सकता -

- हम में इतना अदब ही नहीं, कि उन्हें इज़्ज़त से उठा पायें।

- इतने विशाल नहीं, कि उन्हें हृदय में समा पायें।

- वह नज़र नहीं, जो उस गहराई तक पहुँच उनका स्पर्श कर सकें।

- वह क़दम नहीं, जो उन्हें follow कर सकें।

जगत के उस मालिक, उस परवरदिगार की, किस हद तक तौहीन कर जाते हैं उन्हें नज़रंदाज़ करके, क्या बतायें... उनकी पहचान उस मुकुट से नहीं होती, उनकी ज़िन्दगी के हर चलन से होती है, जो हर क़दम सों नूर ही नूर बिखेरे चले जा रहे हैं।

उनका Aura ही नूर का है। वह इलाही-नूर, जो वह निरन्तर छोड़ते ही चले जा रहे हैं। अब समझ पड़ता है कि भगवान के सर पाछे जो घेरा दिखाई देता है, वह इस नूर का ही है। उनके जीवन के सूर्योदय की किरणें, हर तड़पते दिल पर पहुँचते-पहुँचते इतनी शीतल हो जाती हैं और उसकी सारी तपिश को खेंच कर, उस हृदय को किस क़दर ठण्डक पहुँचाती हैं!

धन्य हैं प्रभु व उनकी लीला! रह-रह कर हाथ जुड़ते हैं। सजदे में सर झुकता है। जी चाहता है यह हाथ सदैव उनकी हुज़ूरी में जुड़े ही रहें। मन बार-बार प्रार्थना करने को उठने लगता है। नज़रें उठ कर उस अनन्त से जा जुड़ती हैं, जो चहुँ ओर व्याप्त है।

आपके गुणों का बहाव स्वतन्त्र है, उस हर बन्धन से, जो जीव ने self impose किये हुये हैं अपने पे! ठीक ही तो है -

- जिसका तन ही अपना नहीं, जिसकी कोई चाह नहीं,

- जो मान-अपमान के घेरे से दूर - बहुत दूर है,

- जो हर शै में होकर, हर शै से अछूता है। ऐसे पे कौनसा बन्धन लगायेगा कोई!

- वह जीवन तो follow करने के क़ाबिल है। Lead me on, O Lord!

इस विलक्षणता को ब्यां करना बहुत ही कठिन है। जितने साधारण हैं, उतने ही विलक्षण। मगर प्रमाणित कर देते हैं जीवन से कि ऐसे ही हर कोई जी सकता है। यह वह रहगुज़र है, जिसे वह स्वयं प्रशस्त करते हैं हम सभी के लिए। इस अनन्त रहगुज़र को हो कोटि-कोटि प्रणाम मेरा!

परम पूज्य मईय्या का ज्ञान ही पूजा है और वह सचमुच पूज्य हैं। यह भावना की बात नहीं। उनके क़दमों के निशां इतने स्थाई होकर इस हृदय स्थली पर उतरते हैं कि उसको वर्णित ज़ुबां से करें न करें आप, जो दिल पे उनके जीवन का ज्ञान उतरता है, वह स्वयं बोलता है। वक्त ने भी उसे prove किया है।

जैसे-जैसे मन की अपनी आवाज़ प्रभु की मौन आवाज़ के नीचे दबती चली गई, यह आवाज़, जो अनुभवों की मधुरता लिए है, धीरे-धीरे उभरने लगी। आंतर उन्हीं से जैसे भरा पड़ा है। प्रभु का अनुपम प्रसाद मिला हुआ है - उनके हर पहलू में उनकी सत्यता, उनका प्यार व उनकी लग्न ही दिखाई देने लगी। उनके अप्रकट का प्राकट्य इस सुन्दरता सों प्रगट होने लगा।

उसकी क्या कहूँ, कौन सी उपमा सों उसे उपमेय बना कर कहूँ? मुझे बड़े-बड़े शब्दों से श्रृंगारना नहीं आ रहा उन्हें। वैसा ज्ञान मेरे पास नहीं। उनकी वाणी का सत्य सिद्ध होने लगा। उनको व्यक्त करना किसी के वश की बात नहीं। वह अव्यक्त तत्व स्वयं को स्वयं ही व्यक्त करते हैं जीवन के उन क़दमों से, जो उन्होंने हमारे जीवन में लिए हैं। प्रभु जी ही हैं, जिन्होंने अपनी करुण कृपा की दृष्टि आप पर डाली और आपके जीवन में यह महान यज्ञ आरम्भ किया। इसमें हर एक आहुती उनकी अपनी ही है। हम तो केवल साक्षी बन इस सत्य की गवाही भर सकते हैं, कि हाँ -

- ऐसा देखा है प्यार, जो प्यार माँगता नहीं।

- कुछ भी नहीं माँगता अपने लिए। उसकी उदासीनता अपने प्रति देखी है।

- जिसका अपने तन से ही संग नहीं रहा, वह किसी से क्या संग करेगा?

हम भले ही मुकर जायें, मगर वक्त ऐसे पावन जीवन को स्वयं सम्भालता है और उसपे कलंक नहीं आने देता। हम भले ही अपनी गन्दगी से उन्हें मलिन कर दें, उस निर्दोष को बेइंतहा दोषों से भर दें! मगर सच की हर गवाही वक्त भरता है।

उस माटी में मिले क़दमों का सदक़ा - वह माटी, वह पत्थर, वह पात-पात, गोया हर शै जो बेज़ुबां है, उस सत्य की गवाही भरती है और प्रभु की इस हक़ीक़त के प्रति झुका लेती है पूर्ण युग को!

कैसे ब्यां कर पाऊँगी उसे इन सीमित से शब्दों से? उस कर्मयोगी के क्या कहने! वह सिर्फ़ करम ही करते हैं और योगी भी हैं! कैसी अनहोनी सी लगती है, मगर इस होनी को झुठलाने की किस में ताब है? वह निरन्तर कर्म करते हैं और आपको भी उन कर्मों में लगाते हैं... जहाँ हज़ारों बहाने बना कर आप बड़ी सफ़ाई से बच निकलने का प्रयास करते हैं! आप escapist बन जाते हैं। अपने फ़र्ज़, अपना धर्म, सभी छोड़ देते हैं और उसका दोष दूसरों पर मढ़ देते हैं।

मगर माँ ऐसा नहीं होने देते, किसी भी साधक के जीवन में! उन्हें गुणों के विस्तार को बताते हैं! सभी इन्हीं गुणों से प्रेरित होकर वर्तते हैं। 'करने का सुख', जब तक मन अनुभव नहीं करने लगता - आपके जीवन में यह यज्ञ वह स्वयं आरम्भ किये होते हैं। वह ठीक कहते हैं, 'गर मैं कर्म न करूँ, तो कोई भी नहीं करेगा। इसलिए मैं निरन्तर कर्म करता हूँ और दूसरों को प्रेरित करता हूँ।'

वह इसमें केवल आप ही के सुख का ख़ज़ाना खोल देते हैं। 'आपका सुख करने में है - दूसरों के प्रति, अपनों के प्रति, वह सभी जो आपको करना चाहिये।' और इस तरह आपको समझा कर, स्वयं कर्म कर-कर के, आपको पहले अपने लिए करने को कहतीं हैं। वहाँ सभी को प्यार है उनके लिए। प्यार में आ लुटा देने को, सभी तैयार हो जाते हैं।

तब तक करवाती जाती हैं, जब तक आपका स्वभाव न बन जाये। साथ ही साथ आप भी करने का सुख पा रहे होते हैं। देने में कितना आनन्द व सुख है - इस आनन्द व सुख का अनुभव बार-बार आपको देकर, आपकी संकुचितता के बंधन, जो आपकी दोष दृष्टि व आपके गिले-शिकवों ने दूसरों पे लगाये होते हैं, तोड़ आपको आप ही से मुक्त कर देती हैं। आप उस सीमित से दायरे से निकल आते हैं - आंतर में create की गई घुटन को ख़त्म कर देते हैं।

जो जीवन आप ही की वजह से मलिन हो जाता है - वह मलिनता, अपने प्यार, निष्काम कर्म, वात्सल्यता, सुहृदयता, सरलता, सरसता, लग्न, श्रद्धा व निरन्तरता सों उज्जवल कर देतीं हैं। कैसा अनुपम प्यार देखने का सौभाग्य मिल जाता है। गुणातीतता परिलक्षित होने

लगती है। वह आपके हर सुख-दुःख की साँझीदार हो जाती हैं। दुःख में वह इस क़दर मिली होती है कि आपका दुःख सिर्फ़ आपका है, ऐसा एक पल को भी नहीं महसूस होने देतीं। अपना समझकर, किस तरह आपको निजात दिला रही होती हैं।

आप उस प्यार पे क़ुरबान हो जाते हैं। मगर जब उस से निजात पा आप सुख का अनुभव करने लगते हैं, तो आपको enjoy करने के लिए अकेला छोड़ देती हैं इस दुआ के साथ, 'जाओ, परमात्मा तुम्हारी ख़ुशियाँ सलामत रखें!' किसी तरह का वहाँ कोई एहसान नहीं होता। आप सुख में अकेले होते हैं, इसलिए आपका ध्यान उस सुख में न होकर, सुख देने वाले में जा टिकता है। देने वाला ही दिखाई देता है और उस रहनुमा की रहनुमाई...

इस तरह कृपा करके, वह दृष्टि आपकी जो आपको मलिन करती है, उस निर्मलता पर सहज ही टिका लेती हैं। गर मन में कृतज्ञता भर जाये तो प्रभु की इस देन में, उनकी अदा, उनकी निर्मलता, उनका आशीर्वाद, उनकी कृपा सभी कुछ एक साथ दिखाई देने लगता है। कैसा सुन्दर उपहार है जीवन का!

प्रभु-जीवन, जिसे देख कर आंतर में आराधना के दीप जल उठते हैं एक साथ ही, कितना ज्योतिर्मय जीवन है प्रभु का! आंतर के अन्धेरों में उजाला भर वह आपको भटकने से बचा लेती हैं! अपने जीवन की लौ से वह मार्ग प्रशस्त करती हैं आपका।

माँ सचमुच ही एक पाठशाला है, जिसमें हम बच्चे बैठ कर बेइंतहा शिक्षा पाते हैं। वह ख़ामोश स्कूल हैं। उनकी आदतें ही उनकी किताबें होती हैं, जहाँ से बच्चों के आंतर में वह शिक्षा संस्कारों के परिवेश में उतरती चली जाती हैं। बच्चे स्वयं भी नहीं जानते कि वह क्या-क्या ग्रहण करते चले जा रहे हैं...

लोग आप से ख़ानदान की बात करते हैं। मगर मुझे लगता है वास्तव में ख़ानदान माँ से चलता है! माँ उस युग की परिभाषा होती है, जो बच्चों में उतर कर बोलती है। उसी से नसल की पहचान होती है। बच्चों में माँ की शिक्षा इस क़दर घुली-मिली होती है कि दोनों का कोई अलग वजूद है, ऐसा लगता ही नहीं।

इस तरह जब जन्मदायिनी मईय्या ने द्वार पर लाकर छोड़ दिया तो सद्गुरु जगद्जननी मईय्या की दी शिक्षा ने, अपनी किताब को - जीवन की किताब को, हमें प्रसाद रूप में साथ दिया। कोई किताब जैसी चीज़ साथ बाँध कर नहीं दी थी।

उनके संग गुज़ारे वे सभी लमहे, जिनमें उन्हें किताब की तरह पढ़ा व समझा था उन्हीं से; जिनके क़दमों ने सारे अक्षर हृदय-पटल पर लिख दिये थे - इतने स्पष्ट और साफ़, जितना उनका अपना हृदय है। इस कालिमा भरी स्लेट पर बहुत उभर कर उतरे, वह सभी बोल, जो संगमरमर की तरह सफ़ेद थे। एक बार तो क़दम डगमगा से गये थे। मगर बहुत जल्द यह भरम का परदा भी उन्हीं की कृपा सों उठ गया...

शेष कुछ संस्मरण अगले अंक में...

जो तुधु भावै साई भलीकार।

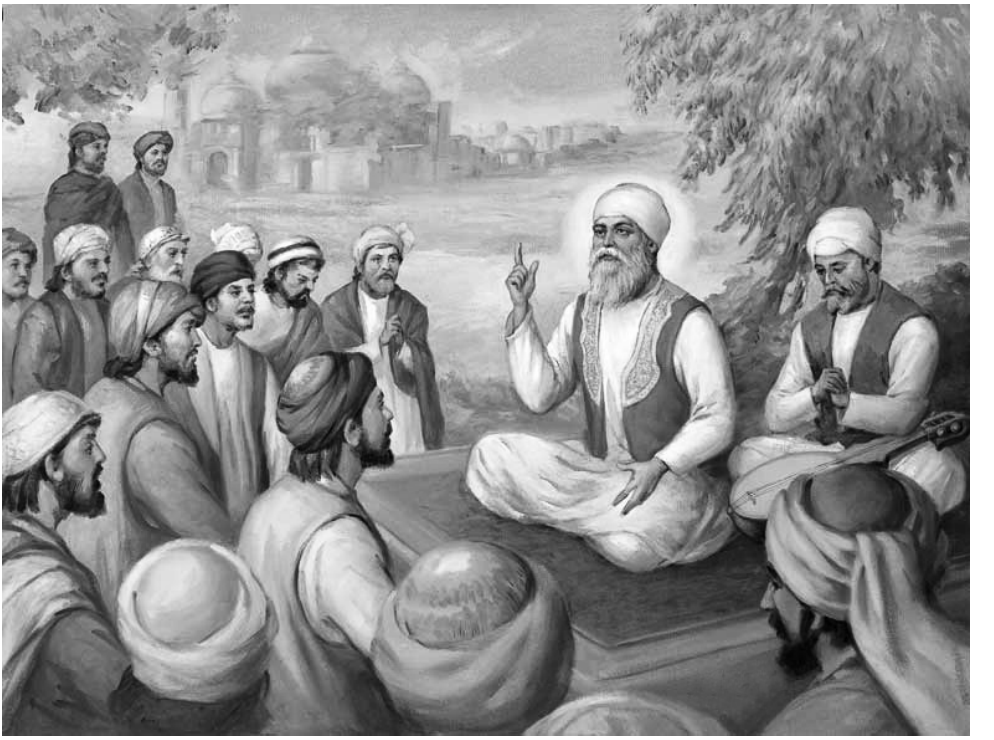

गतांक से आगे - (अर्पणा प्रकाशन 'जपुजी साहिब' में से)

पौड़ी १६

पंच परवाण पंच परधानु।
पंचे पावहि दरगहि मानु।
पंचे सोहहि दरिराजानु।
पंचा का गुरु एकु धिआनु।
जे को कहै करै वीचारु।
करते कै करणै नाही सुमारु।
धौलु धरमु दइआ का पूतु।
संतोखु थापि रखिआ जिनि सूति।
जे को बूझै होवै सचिआरु।

धवले उपरि केता भारु।
धरती होरु परै होरु होरु।
तिसते भारु तलै कवणु जोरु।
जीअ जाति रंगा के नाव।
सभना लिखिआ वुड़ी कलाम।
एहु लेखा लिखि जाणै कोइ।
लेखा लिखिआ केता होइ।
केता ताणु सुआलिहु रूपु।
केती दाति जाणै कौणु कूतु।
कीता पसाउ एको कवाउ।
तिस ते होए लख दरीआउ।
कुदरति कवण कहा वीचारु।
वारिआ न जावा एक वार।
जो तुधु भावै साई भली कार।
तू सदा सलामति निरंकार।।१६।।

शब्दार्थ : *जिन पंचों का ध्यान परमात्मा में लगा हुआ है, वह ही इस संसार में श्रेष्ठ होते हैं। ऐसे पंच ही उस परमात्मा के दरबार में आदर पाते हैं। ऐसे पंच राज दरबार में भी शोभा पाते हैं। इन पंचों का ध्यान एक ईश्वर में ही लगा रहता है। यदि कोई कहे कि (वह उस परमात्मा की रचना पर) और विचार करे, तो भी कर्तार के किये हुए कार्यों की गणना नहीं हो सकती। धर्म ही वह सफ़ेद धौला बैल है, जो दया का पुत्र है। जिसने सन्तोष की रस्सी के साथ इस धर्म को बाँध रखा है, (वही सच्चा है)। यदि कोई जीव इस (रहस्य) को समझ ले, तो वही सच्चा होता है। (वह जान लेता है कि) धौले बैल के ऊपर कितना भार है? धरती परे से परे, और से और है। उसके भार के नीचे कौन सी शक्ति है? अनेकों जातियों, रंगों और नामों के जीव हैं। जब (उस कर्तार की) कलम चली, तो सबका लेखा लिखा गया। यह लेखा लिखना कौन जानता है? किसका लिखा हुआ लेखा होगा (अर्थात् संसार में वर्तेगा)? कितनी शक्ति और कितने सुन्दर रूप हैं, कितनी उसकी कृपा है, उसकी गिनती कौन जानता है (अर्थात् उसको कौन तोल सकता है)? एक शब्द का सारा पसारा किया है (अर्थात् सारी रचना उस एक ओंकार, पूर्ण परब्रह्म की ही है)। उस (एक) से सृष्टि के लाखों दरिया हो गये। किस शक्ति से मैं उसका विचार करूँ? मैं तो (उस दाता पर) एक बार भी बलिहारी नहीं जा सकता। (हे मालिक!) जो तुम्हें अच्छा लगे, वही काम अच्छा है। हे निरंकार! तू सदा ही स्थिर है।*

पूज्य माँ :

प्रथम पंच तू समझ मना, जो परम में खो गये।
महा श्रद्धा पूर्ण जो, वा शरण में सो गये।।१।।

जो योगी हुए योग युक्त, और नानक तेरे हो गये।
धर्म ज्ञान आनन्द कृपा, पाई के सत् में खो गये।।२।।

वितर्क जहान में धर्म कमाई, विचारी ज्ञानमय हो गये।
आनन्द मिला मन मौन भया, अस्मिता कृपामय हो गये।।३।।

कृपा हुई वा नाम की, नाम में वह खो गये।
'मैं' भूली 'मेरा' भूला, वह पूर्ण पंच ही हो गये।।४।।

जब वाणी सन्देश रेखा होये, परम की बात वह माना करें।
अपनी बात वह सब भूले, तब परम के हो गये।।५।।

क्या पंच कोष की बात कहो, या पंच प्राण की कहते हो।
पंच तत्व की बात कहो, या पंच ज्ञान की कहते हो।।६।।

पंच कर्म की बात कहो, या इन्द्रियन् की तुम कहते हो।
जिसकी भी तुम बात कहो, तुम परम की बात ही कहते हो।।७।।

तजी महाभूत तजी के ज्ञान, तजी के मल तेरा नाम लूँ।
सब कुछ छोड़ के साहिबा, मैं नानक नानक ही कहूँ।।८।।

तू पंच भये उस पंच की बात, क्या यहाँ तुम कहते हो।
नानक मेरे आप कहो, क्या ऐसे सन्त की कहते हो।।९।।

उस गुरु की बात कहो, जो तुझमें ध्यान ही धरते हैं।
एको मालिक मान करी, जो नानक नानक करते हैं।।१०।।

तेरा दीदार वह पाते हैं, दरबार में भी वह सुहाते हैं।
क्यों न कहूँ मेरे नानका, तेरे चरण रति हो जाते हैं।।११।।

क्या उनकी बात तुम कहते हो, क्या वह ही पंच कहलाते हैं।
पंचन् की तुम बात कहो, कैसे पंच बन जाते हैं।।१२।।

ओ नानक नानक नानका, पंच जीते वह पंच भये।
पंच भये तेरे दर पे खड़े, तुझको वह ही तो भाये।
मालिक तब सरपंच भये ।।१३।।

ओ नानक नानक नानका, उनकी बात ही कौन कहे।
वह ध्यान तुझी पे जब धरें, तब ही तो जानूँ सन्त भये।।१४।।

ओ नानक ओ नानका, मेरे मालिका...

नानका ओ नानका!

यह तो हुए पंच! उसको प्रिय वह हैं जो पंच हैं। इससे क्यों न समझें कि उसको वह प्रिय है जिसने मन को जीता है, जिसके पास पंचों जैसी मलकीयत है। पंच कोष, पंच प्राण, पंच ज्ञानेन्द्रियाँ, पंच कर्मेन्द्रियाँ, यह जितने पाँच हैं, इन पंचों पर जिन्होंने विजय पाई है, जो इन सब पर विजेता हुआ, वह पंच है। योग की प्रक्रिया में भी पाँच अवस्था हैं। महर्षि पातंजल योग सूत्र में कहते हैं : वितर्क, विचार, आनन्द, अस्मिता और असम्प्रज्ञात! नानक ख़ुद कह रहे हैं, वह भी पंच हैं! तो वह सारे पाँच-पाँच हैं। उन पाँच पर विजय पायें, तो आगे की वह कहते हैं। जो यह विजय पाये, वह आगे जाये।

भक्ति पूर्ण परवाने पंच, प्रभु चरण पुरुषोत्तम पंच।
दरगाह मस्जिद मन्दिर में, श्रेष्ठतम होयें यह पंच।।१ ।।

राजन के राजा के प्रिय, नानक चरणी सुहायें पंच।
एक ध्यान उसी का हो, नित्य मग्न रहें ये पंच।।२ ।।

यही वह कह रहे हैं :-

है ध्यान गुरु ध्यान में गुरु, एक में राखें ध्यान यह पंच।
नाम वाणी हुक्मी चलें, मेरे नानक का है ज्ञान पंच।।३ ।।

जिसने चरणों की धूल ले ली, और अपने को भूल गया, वह ही पंच भया। यही वह यहाँ पर बात कर रहे हैं :-

ब्रह्म जगत और कर्म, अनन्त विचार सों अथाह न मिले।
मालिक जग का कर्म करे, वा बयान को' कर सके।।१ ।।

दया का पुत्र धर्म कहें, दया आसरे धरती रहे।
सन्तोष का धागा पिरो कर, नियमित धरती हुआ करे।।२ ।।

जो जाने जो समझे धर्म, दया धर्म का मूल जो।
सन्तोष सूत्र से बान्धे कर्म, जाने साँचो असूल वो।।३ ।।

आगे वह बोझ की कहते हैं : *'धवले ऊपर केता भारु' जग की बात कहते है :-*

धरती का बोझ उठाये कौन, वा बिन कोई न उठा सके।
शक्ति में शक्ति जो भरे, उसकी महिमा यहाँ कौन कहे।।१ ।।

जीव बहु धर्मा नाम रंग, सबकी रेखा बनी हुई।
उसकी लेखनी की क्या कहें, उसने हर रेखा बना ही दी।।२।।

यह लेखा कितना बड़ा होगा, मालिक महिमा मन गा न सकी।
शक्ति उसकी कौन कहे, और उसको शक्ति किसने दी।।३।।

एक ही शक्ति उसकी जानो, एक शब्द से जग यह भया।
मालिक ने संकल्प किया, जग दरियावत् बहने लगा।।४।।

उसकी महिमा क्या गाईये, प्रकृति बयान भी कैसे करूँ।
बलिहारी न जा सकूँ, उसके लिये कैसे जीऊँ।।५।।

जो उसे भाये वह कहें भला, जो उस पाये वही भला।
वह निरंकार अविनाशी, कैसे मिलूँ अब करूँ क्या।।६।।

मन मेरी भई बहुत उदासी.....

न पंच हूँ मैं न ज्ञानी हूँ, न बात ही तेरी समझ सका।
बलिहारी तेरी क्या जाऊँ, भक्ति में बल ही नहीं पड़ा।।७।।

मैं चरण पड़ी के इतना कहूँ, निज धाम का राह मुझे अब तो बता।
ओ नानक मेरे बादशाह, इतनी मेहर अब करता जा।।८।।

मैं क्या कहूँ क्या न कहूँ, रहमत तेरी ही माँगे हूँ।
रहीम तू, तू दरियादिल, इक बंदग़ी तो माँगे हूँ।।९।।

परवरदिगार तेरा दीदार, ज़िंदगी में माँगे हूँ।
पात्र नहीं मोपे ज्ञान नहीं, किस मुँह से तुझी को माँग लूँ।।१०।।

मुझे निज चरणन् में रहने दो, आज नानक नानक कहने दो।
तेरे गुण मैं गा नहीं पाऊँगा, मुझे चरण में मौन ही रहने दो।।११।।

ओ नानका मेरे बादशाह!

ओ नानका मेरे बादशाह!

फिर कहते हैं :-

'वारिआ न जावा एक वार, जो तुधु भावै साई भलीकार'

कैसे चरण में आऊँ, कैसे किसको चढ़ाऊँ।
मैं खाली हाथ ही आया हूँ, तेरी चरण धूलि बन जाऊँ।।१।।

तू नित्य निरंजन निर्मल आप, तू शाश्वत आनन्द स्वरूप आप।
आनन्दघन अविनाशी तत्व, ब्रह्म का एक रूप आप।।२।।

तेरे चरण पड़ी ओ दिव्य स्वरूप, तुमसे तुमको माँग तो लूँ।
ख़ुद की बलि दे न सकूँ, पर आवाहन तेरा करूँ।।३।।

यह 'मैं' की जा तुम आन बसो, यह रोम रोम फिर तेरा हो।
तू परम पुरुष परमेश्वर आप, नित्य सलामत तुम ही हो।।४।।

नित्य अच्युत अव्यय तुम, सत्य अविनाशी तुम ही हो।
एक सत् बस तुम ही तो हो, ओंकार भी तो तुम ही हो।।५।।

धरती पे तुम ब्रह्म रूप, मेरा गुरु इक तुम ही तो हो।
तुम ही कहो कुछ कह न सकूँ, मैं अज मानूँ जो तुम कहो।।६।।

वर्णन किया न जाये तेरा, बात कही न जाये।
ओ नानक नानक नानका, तेरी चरण धूलि मिल जाये।।७।।

गुणगान तेरे कस गाऊँ, कोई गुण गाया न जाये।
आज पुनि कहूँ नानका, मन चरणन् में खो जाये।।८।।

पंचन् की जो बात कहें, भक्ति मुझे नहीं आये।
श्रद्धा की तू बात कहे, उसे तू कहाँ से पाये।।९।।

ओ नानक मेरे बादशाह, तेरे दर पे आज हम आये।
दामन जैसा भी यह है, वह दामन आज फैलाये।।१०।।

इक बुन्दिया मेरे बादशाह, तेरे रहम की मुझे मिल जाये।
तेरे चरण का ज़र्रा बन जाऊँ, तो वो आफ़ताब हो जाये।।११।।

क्रमशः

अपने तन को 'मेरा नहीं' जान कर, औरों को दे दो...

ये मे मतमिदं नित्यमनुतिष्ठन्ति मानवाः।
श्रद्धावन्तोऽनसूयन्तो मुच्यन्ते तेऽपि कर्मभिः।। ४/३१

देख नन्हीं! यहाँ भगवान स्पष्ट कह रहे हैं :

शब्दार्थ :

१. **जो कोई भी पुरुष,**
२. **दोष बुद्धि से रहित हुआ और श्रद्धा से युक्त हुआ**
३. **सदा मेरे इस मत के अनुसार चलेगा,**
४. **वह सम्पूर्ण कर्मों से छूट जायेगा।**

तत्व विस्तार :

नन्हीं![*] पहले समझ ले कि भगवान ने क्या कहा है -

१. तू आत्मा है।
२. तू मृत्यु-धर्मा तन नहीं।
३. हर कर्म गुणों का खिलवाड़ है।
४. तुम्हारा तन भी गुणों से बधित है और दूसरे का तन भी गुण बधित है।

[*] यहाँ पर आभा भण्डारी को परम पूज्य माँ 'नन्हीं' कह कर सम्बोधित कर रहे हैं, जिनके विनीत आग्रह पर श्रीमद्भगवद्गीता का यह विस्तारपूर्वक वर्णन हुआ!

५. किसी को बुरा-भला मत कहो।
६. निष्काम भाव से निरासक्त हुए साधारण जीवन में कर्म करते जाओ।

अब भगवान कहते हैं, 'जो भी पुरुष मेरी इस कथनी को मान लेगा, वह कर्मों से छूट जायेगा।' उन्होंने कहा, 'दोष दृष्टि रहित हुआ और श्रद्धा से युक्त हुआ जो मेरा मत मानेगा, वह कर्मों से मुक्त हो जायेगा।'

प्रथम दोष दृष्टि को समझ ले। भगवान ने कहा है, यदि तू इसे बिना दोष दृष्टि के सत्य मान लेगा, तभी तो तेरा लक्ष्य सिद्ध होगा।

दोष दृष्टि :

१. दोष दृष्टि वाले को दूसरे की कथनी में त्रुटियाँ दिखती हैं।
२. अवगुण दर्शी बुद्धि को दोष दृष्टि पूर्ण कहते हैं।
३. दोष दृष्टि, न्यूनता आरोपित करने वाली दृष्टि है।
४. निन्दक की दृष्टि दोष पूर्ण है।
५. जो केवल दूसरे को ग़लत ठहराना चाहे तथा जो मिथ्या सिद्धान्तों का आसरा लेकर सत्यता न समझ सके, उसकी दृष्टि दोष पूर्ण है।
६. तर्क वितर्क करके जो नित्य अपनी मान्यता को ही सत् सिद्ध करना चाहे, उसकी दृष्टि दोष पूर्ण है।

नन्हीं! यह दोष दृष्टि बड़े बड़े बुद्धिमानों को भी सत् पथ से गिरा देती है।

क) जो वह स्वयं नहीं कर सकते और नहीं करना चाहते, उसे वह दूषित पथ ही कह देते हैं।
ख) फिर, जीव तो अपनी मान्यताओं से भरा हुआ होता है। उसकी दृष्टि उसकी अपनी ही मान्यताओं द्वारा आवृत होकर, दूषित हो जाती है।
ग) हर प्राणी को मौन में अपना अनुभव होता है। वह अपने आंतरिक विकार ही दूसरे में देखता है। जीव के अपने दुर्गुण ही उसकी दृष्टि को दूषित कर देते हैं।
घ) उस दोष दृष्टि के कारण ही तो जीव दूसरे की महानता नहीं देख सकता। जो दोष दृष्टि से रहित होगा, वह भगवान के इस कहने को अक्षरशः मान ही लेगा कि, 'तुम तन नहीं हो, आत्मा हो' और 'तुम आत्मवान् बनो'।

अब साधारण जीव के लिये यह बात मान लेनी कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव है। इसे तो वही मानेगा जो :

१. कृष्ण को सच ही भगवान मानेगा।
२. कृष्ण को सत् स्वरूप मानेगा।
३. भगवान कृष्ण के जीवन को ज्ञान का विज्ञानमय रूप मानेगा।
४. भगवान कृष्ण को अध्यात्म का प्रकाश रूप मानेगा।

कोई ऐसा विरला मनुष्य ही होगा जो 'आत्मवान्' तथा 'ब्राह्मी स्थिति' को ही अपना लक्ष्य बना लेगा। तत्पश्चात्, श्रद्धा का होना अनिवार्य है।

निर्दोष बुद्धि को लक्ष्य तो बना लिया, अब जीवन के भवसागर को कैसे तरें और कैसे उससे पार होयें? तनत्व भाव अभाव का जीवन में अभ्यास और भी मुश्किल है।

'मैं आत्मा हूँ' कह कर,
क) जंगलों में चले जाना,
ख) अपने कर्तव्यों का परित्याग कर देना,
ग) लोगों से दूर हो जाना,
आसान है; किन्तु भगवान कहते हैं, 'तू

आत्मा है, तू तन नहीं! तन के प्रति जो तेरा ममत्व भाव है, उसे छोड़ दे और तन दूसरों को दे दे, इससे निरासक्त हुआ इस तन को निष्काम कर्म करने दे।' नन्हीं! इस बात को निभाना बहुत कठिन है। लोग ग़लती भी यहीं कर देते हैं। आत्मा परमात्मा की बातें उन्हें अच्छी लगती हैं, जीवन में लोगों को तन दे देना उन्हें बुरा लगता है। लोगों के सपने पूरे करोगे तब ही तो निष्काम भाव से कर्म करने आयेंगे और निरासक्ति का अभ्यास कर सकोगे! किन्तु मन कहता है, 'हम तो आत्मवान् बनने चले हैं, किसी के नौकर बनने तो नहीं!' इसी कारण नन्हीं! तनत्व भाव का त्याग नहीं हो सकता। तनत्व भाव त्याग के लिये श्रद्धा चाहिये। अब श्रद्धा को भी समझ ले।

श्रद्धा :

१. श्रद्धा भगवान के आदेश पर विश्वास को कहते हैं।
२. भगवान के गुणों पर विश्वास श्रद्धा है।
३. हमारा स्थूल विषयों में विश्वास होता है। दैवी गुणों में गर विश्वास हो तो उसे श्रद्धा कहते हैं।
४. श्रद्धा उस गुण में होती है, जिसका दृष्ट रूप या फल नहीं होता। जिसने अपने तनत्व भाव का त्याग करना है, उसको परम गुण में साधारण ही नहीं, दिव्य तथा अलौकिक श्रद्धा की आवश्यकता होती है।

क) उसने तो जीवन भर निष्काम कर्म करने का व्रत लिया है।
ख) उसने तो सदा अपने आपको भूले रहने का व्रत लिया है।
ग) उसने तो हमेशा दूसरों को स्थापित करने का व्रत लेना है।
घ) उसने निरासक्त रहने का व्रत लेना है।
ङ) उसने तो अपनी रुचि अरुचि के प्रति उदासीन रहने का व्रत लेना है।
च) उसने तो अपने मान या अपमान के प्रति उदासीन रहने का व्रत लेना है।

इस व्रत का पालन करते समय, संसार में कौन सी समस्यायें उठ आयें, कैसी वातावरण रूपा ऋतुओं का सामना करना पड़ जाये, राह में किन चाहनाओं के तूफ़ान आ जायें, व्रती इन सब की परवाह नहीं करता। नन्हीं! इस भवसागर से तरने के लिये नाम रूपा लक्ष्य ही नैया है और श्रद्धा रूपा चप्पू ही इससे पार लगा सकते हैं।

इस कारण भगवान कहते हैं, 'दोष रहित होकर, तथा श्रद्धा से युक्त होकर जो भी मनुष्य मेरे मत को मानेगा, वह कर्मों से छूट जायेगा।' यानि, वह कर्म फल चक्र से ही छूट जायेगा।

ये त्वेतदभ्यसूयन्तो नानुतिष्ठन्ति मे मतम्।
सर्वज्ञानविमूढांस्तान्विद्धि नष्टानचेतसः।। ४/३२

देख नन्हीं! भगवान क्या कह रहे हैं :

शब्दार्थ :

१. जो दोष दृष्टि पूर्ण लोग मेरे इस मत को धारण नहीं करते,
२. उन्हें सर्व ज्ञान पूर्ण विमूढ़ गण,
३. तथा नष्ट हुए लोग जान।

तत्व विस्तार :

देख नन्हीं! भगवान कहते हैं; जो दोष

दृष्टि के कारण उनका कहा नहीं मानते, वे सारा ज्ञान पाकर भी :

१. विमूढ़ ही हैं।
२. नष्ट हो जाते हैं।
३. अविवेकी रह जाते हैं।
४. अंधे ही रह जाते हैं।
५. मोह ग्रसित रह जाते हैं।
६. अंधकार में ही रह जाते हैं।
७. तनत्व भाव का त्याग नहीं कर सकते।
८. कर्तृत्व भाव का त्याग नहीं कर सकते।
९. निष्काम भाव में स्थिति नहीं पा सकते।
१०. निरासक्त नहीं हो सकते।

नन्हीं! इसलिये तो कह रहे हैं कि :

क) अपना तन अविवेकी गण के साधारण कामों के लिये दे दो।
ख) दूसरों के काम करना और दूसरों के सपने पूरे करना ही तनत्व भाव त्याग का अभ्यास है।
ग) अपना ममत्व भाव छोड़ कर औरों के ममत्व भाव को मत ठुकराओ।
घ) अपने तन, मन और बुद्धि के प्रति उदासीन होकर दूसरे लोगों के कार्यों का समर्थन करो।
ङ) लोगों को बुरा-भला कह कर उन्हें छोड़ न दो, अपने तन को 'मेरा नहीं' कह कर लोगों को दे दो।

नन्हीं!

१. दिनचर्या में आत्मवान् की तरह विचरने का अभ्यास करो।
२. अहंकार रहितता का अभ्यास करो।
३. अपने जीवन को शास्त्र कथित वाक्यों से तोलो।
४. आपका जीवन शास्त्रों की जीती जागती प्रतिमा होना चाहिये।
५. आत्मवान्, 'मैं आत्मा हूँ' कभी नहीं कहते। वह तो साधारण जीवन में ऐसे जीते हैं जैसे कि उनकी कोई हस्ती ही नहीं।
६. सहज जीवन में उनका कोई प्रयोजन और योजन नहीं होता।
७. वह तो औरों के प्रयोजन अर्थ योजन बनाते हैं, किन्तु अपनी ही बनाई हुई योजनाओं से उन्हें कोई प्रयोजन नहीं होता।
८. वह तो आलस्य रहित हुए, नित्य लोगों के काम करते रहते हैं। यदि उन्हें कोई काम न भी दे तो भी नित्य मुदित ही रहते हैं।
९. यानि, वह न तो निवृत्ति की चाहना करते हैं, न ही प्रवृत्ति की चाहना करते हैं। निवृत्ति प्रवृत्ति तन की होती है और वह तो तनत्व भाव को ही त्याग चुके हैं। अब तन कुछ करे या न करे, इसकी उन्हें परवाह नहीं।

नन्हीं साधिका! तन को परिस्थिति के थपेड़े खाने दो। तन को परिस्थितियों से बचाने का प्रयत्न वही कर सकता है जो इसे अपना माने, तुम तो तनत्व भाव त्यागना चाहती हो। जग से भागने वाले तन से नहीं उठ सकते, वह भगवान को क्या पायेंगे?

आपकी 'मैं' को आत्मा में समाना है। आप अपनी 'मैं' को अकेले ही ले आयें, तन को साथ क्यों ले जाते हो? तन इस जग को देते जाईये।

नन्हीं! ब्रह्म लोक में अकेले ही जा सकते हो। ब्रह्म लोक में आत्मा ही जा सकता है, जड़ तन नहीं जा सकता, चाहे वह तन अपना सहयोगी ही हो।

‘मन्त्र का प्रमाण फिर, तुम आप ही हो जावो।’

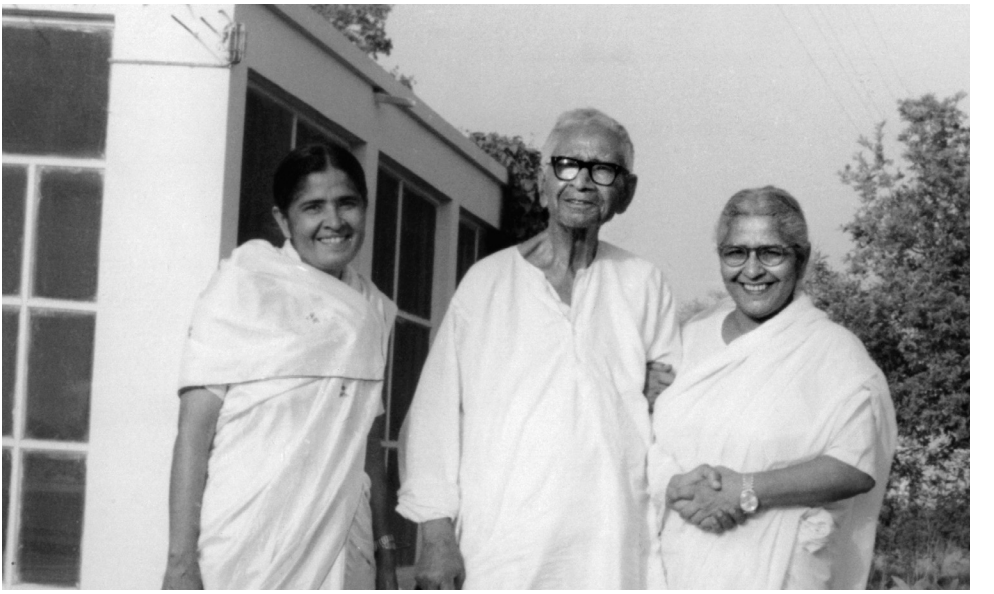

चित्र में पूज्य माँ के साथ उनकी बहन, सुश्री निर्मल आनन्द एवं उनके पिता जी, श्री.सी.एल.आनन्द, जो लाहौर में लॉ कॉलिज के प्रिंसीपल थे। उनके द्वारा पूछे गये गहन प्रश्न पाठक को भी आत्म-मंथन की ओर ले जाते हैं...

पिताजी - *श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है -*

रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन्।
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति।। २/ ६४।।

प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते।। २/६५।।

इन श्लोकों में भगवान कहते हैं कि ‘अर्जुन, विषयों में कोई दोष नहीं होता!

अर्थात् - *वशवर्ती मन वाला पुरुष, राग द्वेष से रहित हुआ और वश में की हुई इन्द्रियों से, विषयों को भोगता हुआ भी, प्रसाद को प्राप्त होता है।*

उस प्रसाद के मिलने से इनके सम्पूर्ण दुःखों का अभाव हो जाता है। प्रसन्नचित्त वाले (पुरुष)

की बुद्धि शीघ्र ही स्थिर हो जाती है।'

जब प्रसाद मिल जाये तो तमाम दुःखों का अभाव हो जाता है। यह प्रसाद क्या है और कैसे मिलता है?

परम पूज्य माँ :

प्रश्न अर्पण -

तोरा प्रसाद रे जब मिले, दुःख एको भी नहीं रहे।
कौन प्रसाद है कैसे मिले, सम्पूर्ण जो दुःख विनशें।।

राम यह है कौन कृपा, कैसे क्योंकर होती है।
यह प्रसाद जिसको कहते हैं, फलीभूत कस होती है।।

समझ मना यह प्रसाद है क्या, समझ मना यह कैसे मिले।
कहाँ पे चित तोरा रे टिके, किस विध घूँघट तव उठे।।

तत्व विस्तार -

यह बाह्य की कोई बात नहीं, बाह्य से कोई न दे सके।
सुख मन का गुण जानिये, यह मन में ही हो सके।।

मन कासा जब बन जाये, सत्यता को मान ले।
जो राम कहा अक्षरांक्ष, सत् वचन वह मान ले।।

'मैं' राममय हो जाये, 'मैं' में चैन आ जायेगी।
रेखा जो हो हुआ करे, दुःख रह नहीं पायेगी।।

आत्म कृपा चाहिये, प्रसाद तब ही मिल सके।
अहंकृपा चाहिये, प्रसाद कासा तब बने।।

शास्त्रकृपा चाहिये, शास्त्र की तब समझ पड़े।
भगवान कृपा चाहिये, पूर्ण तब ही हो सके।।

शास्त्र पढ़ी पढ़ी कृपा न हो, वंचित रह ही जावोगे।
शास्त्र राह प्रसाद सों, कुछ नहीं रे पावोगे।।

जब मन में एक ही चाहना हो, वह सत्मय हो जाने की।
जो सत् आप जान लिया, उसमें ही खो जाने की।।

जो शास्त्र कहा उसे मान लो, उसपे ही रे ध्यान धरो।
तुला बनाई के उसकी रे, अपने मन को देख लो।।

गर चाहना तेरी हुई, उस जो कहा मैं मानूँगा।
वह तो है सत् स्वरूप, वा प्राकट्य मैं जानूँगा।।

इस भाव से गर पठन किया, भगवान उसको मान लिया।
पूर्ण में पूर्णता वा की, पूर्ण ही है जान लिया।।

प्रथम उसे ही तोल के, निज बुद्धि राह तू देख ले।
वा के वचन से उसको ही, अरे तोल तोल के देख ले।।

आप तुला वा की जो, निज शब्द तुला पे तुल जाये।
वह सत्य है कहते हुए, मन तेरा क्यों संकुचाये।।

वा वाक् शास्त्र रूप में जो, वा की प्रतिमा उसे जान करी।
वाङ्मय प्रतिमा उसकी, गीता को ही मान करी।।

फिर ध्ययन करो वा पठन करो, हर वाक् उसका मान लो।
जड़ शब्द वह नहीं रहे, हर वाक् चेतन हो जाये।।

वह शब्द कहे तुम मान लो, तब ही मन्त्र कहलाता है।
जो शब्द कहे और न माने, वह जड़ ही रह जाता है।।

पुनि समझ है मन्त्र क्या, शब्द संग्रह वह नहीं।
उसमें तो है चेतनता, पर तुम चेतन करो नहीं।।

अब समझ गर मन्त्र पढ़ो, और उस मन्त्र को मान लो।
मन्त्र का प्रमाण फिर, तुम आप ही हो जावो।।

वह मन्त्र श्याम ने आप कहे, जो सुनो तुम हो जावो।
वह मन्त्र तब ही हृदय से, तुम कह पावो।।

वह मन्त्र नहीं जो जड़ रहे, वह बोल लिया पर माना न।
वह मन्त्र कौन मानेगा, जहाँ सत्यता कोई जाना न।।

उसे देख करी समझ करी, वा सत्यता गर मान ले।
प्रसाद रूप तू आप भये, मूर्तिमान तू आप करे।।

समझ पुनि तू समझ ले, गर मन्त्र है वह तो प्रसाद है तू।
गर जड़ है वह तो जड़ है तू, समझेगा क्या मन्त्र तू?

पुनि समझ प्रसाद है क्या, प्रसाद आप ही हो सके।
हो अहंकृपा हो शास्त्रकृपा, तब ही तो यह हो सके।।

जब लौ मन ही न माने, वह आप वही नहीं हो सके।
जिस पल मन ने मान लिया, तब ही तो वह हो सके।।

प्रसाद जान क्या है देख्र, प्रसाद शब्द में नहीं मिले।
स्थूल प्रसाद जिसे कहें, वह तेरा तन ही तब भये।।

हर मन्त्र को मन्त्र कर दो, मन चरण में तुम धर दो।
चाहना केवल सत् रमण की, अब तुम कर लो।।

कौन दुःख्र फिर कहाँ रहे, जब आप आप ही आप रहे।
मन वहाँ नहीं रहे, रेख्रा प्रहार वहाँ कहाँ करे।।

पुनि समझ जो दुःख्र सुख्र है, यह द्वन्द्व कहाँ से उठते हैं।
रुचि अरुचि पे आधारित, यह स्थूल जहाँ से उठते हैं।।

बुद्धि कहे मुझे वही मिले, जब वह मिल नहीं पाता है।
दुःख्र उठे उस पल ही, विपरीत जब मिल जाता है।।

विपरीतता क्या है जान, वहाँ सत्यता पहचान ले।
केवल इतना जान ले, दुःख्र कण भर न रह सके।।

प्रसाद की बात कहते हो, प्रसाद स्थूल वस्तु नहीं।
जो प्रतिमा आप भया, वह आप प्रसाद भया प्रसाद मिला नहीं।।

समझ मना समझ करी, वह आप प्रसाद है जान ले।
वा दामन में प्रसाद पड़ा, यह नहीं कोई कह सके।।

प्रसाद प्रसाद वह आप है, प्रसाद धन वह आप भया।
प्रसाद उसे ही मिल गया, जिसने उसको देख्र लिया।।

सत्य की प्रतिमा आप भया, वहाँ 'मैं' अभाव हो गया।
शनैः शनैः जो राम कहा, वह मूर्तिमान हो गया।।

अब जो भी प्रहार करे, उसको नहीं कुछ छू सके।
कौन प्रसाद उसे मिले, दुःख्र सुख्र उसको क्या कहें।।

प्रसाद शास्त्र का जान ले, प्रसाद राम का जान ले।
प्रसाद सत्य का जान ले, वह आप वही भयें देख्र ले।।

मन कासा बनाया जब, मन दान का पात्र भया।
जो भी श्याम ने जहाँ कहा, मन को वह ही प्रिय लगा।।

प्रीतम राम को जान करी, वह चरण चढ़ी के समझ सका।
चरण पकड़ के नहीं नहीं, चरण पड़ी के समझ सका।।

जो भी कहा उस देख तो ले, उसको साधक समझ ले।
समझ करी प्रमाण ले, हृदय में उसको आन धरे।।

यह समझ तब ही आये, प्रथम जो सत् को मान ले।
मैं आप वही रे हो जाऊँ, रेखा भाव वह मन धरे।।

जिस पल ऐसा हो जाये, समझ प्रसाद रे वह भया।
गर कहना है तुम कहलो, संसार उसको मिल गया।।

प्रसाद उसे रे मिले नहीं, वह आप वही हो जायेगा।
मन्त्र उसे रे क्या मिले, वह आप मन्त्र हो जायेगा।।

वह कुछ भी अब नहीं कहे, वह तो आप ही आप भया।
सुख दुःख कहाँ पे रह सके, जहाँ मैं कहीं पे नहीं रहा।।

बस विधि एक है, गीता को सत् मान लो।
जो राम कहा वह सत् मानो, उपनिषदन् को सत् जान लो।।

अब निर्णय में व्यर्थ ही, क्यों तुम समय गँवाते हो।
अनेक वर्ष वह सत् ही रहा, क्या निर्णय करना चाहते हो?

ऐसे से अब बुद्धि राह, निर्णय मन तू क्या लेगा।
सत्यता का प्रमाण क्या, उससे तू चाहेगा।।

यह चाहना यह वाद विवाद, अब मना तू छोड़ दे।
सत् मानो और हो जायो, अन्य भाव तू छोड़ दे।।

जैसा नाम भी तुम लो, यह मान के अब लेना।
राम सत्य है जान करी, उसे सत् मान के अब लेना।।

जो कहा वह होये करी, सत् सत् मन उसे जान लो।
तब ही जानो प्रसाद मिले, दुःख सुख से परे हो।।

सो राम कहो राम राम राम .....
राम राम .....

'सद्गुरु तत्त्व'

डा.जे.के महता

पापा जी एवं श्रीमती सत्य महता (बीजी) के साथ परम पूज्य माँ

डॉ. जे. के. महता, जिन्हें आश्रम में सब प्रेम और आदर से पापा जी कहते हैं, अर्पणा के चेयरमैन Emeritus थे। परम पूज्य माँ की दिव्यता पहचानते ही, उन्होंने अपनी आध्यात्मिक पुकार की प्रबलता के कारण, जालंधर में अपनी अत्यन्त सफल medical practice छोड़ कर, माँ की सेवा में आजीवन रहने का दृढ़ निश्चय कर लिया... यहाँ पर हम उन्हीं के द्वारा जून १९९३ में लिखे गये लेख को प्रस्तुत कर रहे हैं, जहाँ उनकी आंतरिक भक्ति की झलक मिलती है...

मेरे लिये माँ सत्य स्वरूप, शास्त्र की प्रतिमा, परम तत्व का धरती पर प्रमाण, निराकार का साकार रूप, अव्यक्त का प्राकट्य, मेरे सद्गुरु हैं। आज मैं यह भी जानता हूँ कि ३५ वर्ष पूर्व जब वह मेरे जीवन में आये थे, तब भी वह यही थे जो आज हैं। तब मैं इन्हें क्या जानता था और आज मैं इन्हें क्या जानता हूँ, इसी में गुरु तत्व का राज़ छुपा है, जो इनके साथ मेरे जीवन की कहानी है।

एक बीमार महिला की तीन दिन और तीन रात सेवा करते हुये प्राकृतिक नियमानुसार जब इनका शरीर बेहोश होकर गिर पड़ा तो एक डाक्टर के नाते मुझे बुलाया गया। पूछने पर

आप हँस कर कहने लगे, "सोने की तो मुझे याद ही नहीं रही"। दूसरे की सेवा में अपने आप का नितान्त भुलाव ही तनत्व भाव के अभाव का प्रमाण है, जिसकी यह अद्‌भुत झलक मुझे मार्च १९५८ में, पहली बार मिली।

उस समय मैं अपने आपको बड़ा ज्ञानी मानता था। अनेकों संतों के चरणों में बैठकर उनकी कृपा प्रसाद से वेदान्त का ज्ञान पाया था, उपनिषद् और गीता का तत्व मेरे आन्तर में प्रकाशित है, ऐसा मैं मानता था। मैं रमण महर्षि को तनत्व भाव के नितान्त अभाव का प्रमाण और शास्त्रों की प्रतिमा मानता था। हृदय में उन्हें मैंने सद्‌गुरु के रूप में धारण किया था। मेरे जीवन में उनके सम्पर्क में आने से कुछ ऐसे चमत्कार हुये कि मैं अनायास ही उनके चरणों में खिंचा आया। फिर, संसार भी उनको ऐसा मानता था।

माँ में, जहाँ देहात्म बुद्धि का लेशमात्र भी नहीं था, मैंने इसी तनत्व भाव के अभाव, निरहंकार और अपने तन के साथ नितान्त संग मिटाव की यह झलक प्रथम दर्शन में पाई, परन्तु अपने ज्ञान के आसन पर बैठकर मैंने इन्हें बिलकुल ग़लत ठहराया। इसको मैंने इनका भोलापन और अज्ञानता कहा और इससे उनको बचाने का जिम्मा मैंने अपने हाथ में लिया। इनका 'सुधार' करने के लिये मैंने इन्हें अपने घर नित्य गीता का ज्ञान सुनने के लिये आमंत्रित किया।

आज मैं स्वयं हैरत से देख रहा हूँ कि जिन रमण महर्षि को मैं धरती पर पूर्णता का प्रमाण मान कर उनकी प्रतिमा को हिय में धारण किये हुए था और इसे भगवान की स्वयं पर अतीव करुणा मान रहा था, माँ में उन्हीं रमण की यह झलक देख कर मैंने कहा "यह बिलकुल ग़लत है, मूर्खता है, इससे इनका संरक्षण मेरा धर्म है।" इससे ही मेरे ज्ञान के गुमान का अनुमान होता है। यह तो माँ का झुकाव था, तथा अपनी स्थिति के साथ उनकी नितान्त असंगता का प्रमाण था कि इन्होंने रोज़ मेरे घर आकर मेरी पूजा में शामिल होना स्वीकार कर लिया। मैं ज्ञान का और शास्त्रों का उपदेश करता और यह शिष्यवत् पूर्ण श्रद्धा और झुकाव से उसे सुनते और मानते। पाँच वर्ष तक निरन्तर ऐसा ही होता रहा।

मैं आज यह देख रहा हूँ कि प्रथम झलक ही उनमें देवत्व की झलक थी। किसी के दुःख-क्लेश को देखकर इनका करुणापूर्ण हृदय दूसरे के तद्‌रूप होकर अपने आप को भूल गया और उसके कष्ट-क्लेश को दूर करने में लग गया। यह तो भगवान के गुण, दिव्य प्रेम की झलक थी, फिर भी मेरे ग़लत ठहराने पर इन्होंने अपने समर्थन में एक शब्द भी नहीं कहा। यही नहीं, इनके आन्तर में भी विरोध का एक भाव भी नहीं उठा। यह तो अपने में से प्रवाहित हो रहे दैवी गुणों के साथ इनकी नितान्त असंगता और निरहंकारता का प्रमाण था। मैं अपने ज्ञान के गुमान में अंधा यह कुछ भी न देख सका।

यहाँ से ही पूज्य माँ की और मेरे जीवन की कहानी का आरम्भ होता है। आज इसे मैं सद्‌गुरु की अतीव अहैतु की कृपा के रूप में देख रहा हूँ। सद्‌गुरु केवल मुख से ही ज्ञान नहीं देते, वह तो शिष्य के जीवन को मल से विमुक्त करने के लिए जीवन में हर स्तर पर

उसे थामते हैं। उनका तप ही पावनकर है। यह जानने में मुझे ३५ वर्ष लगे, और यह ३५ वर्ष माँ मौन रहे और आज भी मौन हैं। आज उन ३५ वर्षों का उनका मौन और तप, और मेरे अहं रूपा मल के धुलने की कहानी ही उनकी और मेरी कहानी है।

पापा जी का मन्दिर,
जहाँ पूज्य माँ रोज जाया करते थे...

९ मार्च १९५८ से, पूज्य माँ ने मेरी पूजा में सम्मिलित होने के लिए नित्य हमारे घर के मन्दिर में आना आरम्भ किया। "पूर्ण संसार ही भगवान की रचना है, और साधक को पावन करने के लिये, उसे सत् पथ पर चलाने के लिये उनका करुणा रूप उसे मिला है," माँ के पहले पाँच वर्ष जो हमारे परिवार के सम्पर्क में बीते, उनके इस भाव का प्रमाण हैं। उन आरम्भिक पाँच सालों में मुझे पूज्य माँ में इस भाव की झलक मिलती रही। माँ मौन रहे, उन्होंने मुख से कुछ भी नहीं कहा। संसार के प्रति यह उनका पूज्य भाव था और इसी भाव से उन्होंने हमारी सेवा चाकरी भी आरम्भ कर दी।

सबकी सेवा और चाकरी, जो माँ अब तक जीवन भर करते आये थे और जिसमें वह अपने आपको पूर्ण रूपेण भूल चुके थे, उसी एक झलक ने मुझे उनके प्रति आकर्षित किया था। माँ अब वही सेवा और चाकरी मेरी और मेरे कुल की करने लगे। अपने अहंकार के कारण मैं उनके इस नित्य झुकाव, संग मिटाव, अहं अभाव को देख न सका। मैं इसमें भी अपनी श्रेष्ठता देखने लगा। मेरा अहंकार और अन्धापन और भी अधिक बढ़ने लगा एवं परिपक्व होने लगा। उनके झुकाव को देखकर मेरा ही नहीं, मेरे कुल का अहंकार भी बढ़ने लगा।

आज उस काल में प्रमाणित, उनके हृदय से प्रवाहित नाम के बहाव को मैं अपना आदर्श मानता हूँ, लक्ष्य जानता हूँ। जो ज्ञान मुझे मेरे आदि सद्गुरु ने एक तन धारण कर के मुख से नहीं दिया, वरन् अपने जीवन राही दिया, मैं अंधा उस पल उनके हृदय में इस नाम का प्रवाह, रचना के रूप में भगवान के प्रति पूज्य भाव, और उनके दैवी गुणों से प्रीत न देख सका। यह सब तो उनके हृदय का भक्ति रूप में प्रवाह था, मैं इस पर भी अपना अहंकार आरोपित करता रहा। मैं इनके इस भक्ति भाव को भी न पहचान सका और उसे भी अहंकार का रूप मानता रहा। इससे मेरा अज्ञान एवं अहंकार बढ़ता गया। परिणाम में हमारे घर में इनकी स्थिति साधारण चाकरों से भी न्यून बनती गई।

इसी सन्दर्भ में याद आती है एक घटना- एक बार जब मैं और मेरी पत्नी दस दिन के लिये साधु संतों के सत्संग का लाभ उठाने के लिये ऋषिकेश गये, तो पूज्य माँ दस दिन के

लिये दफ़्तर से छुट्टी लेकर हमारे बच्चों और घर की देखभाल के लिये चण्डीगढ़ से जालंधर आकर हमारे घर में रहने लगे। हमारा विश्वास अपने पुराने नौकरों पर अधिक था। माँ का घर में रहने का प्रयोजन तो केवल ऊपरी देखभाल का था। माँ को रहने के लिये हमने एक छोटा सा कमरा दिया। हमारे नौकर भी इन्हें अपने से निकृष्ट समझ कर उनके साथ अपमानजनक व्यवहार करते रहे।

माँ का अपना अर्दली और छोटे माँ, जो माँ के साथ थे, यह देखकर तड़प गये, परन्तु माँ ने उन्हें चुप रहने का आदेश दिया और बड़े प्रेम से दस दिन मौन में नौकरों का अपमान सहते हुये घर की व बच्चों की देखभाल करते रहे। इनसे बच्चों को इतना प्रेम मिला कि बच्चों को तनिक भी हमारी याद नहीं आई। वापस आने पर हमें पता लगा कि माँ के साथ नौकरों ने कैसा व्यवहार किया, पर हमने उन्हें कुछ भी तो नहीं कहा। उस पल की माँ की अहंरहितता, संग रहितता, रेखा-बद्ध भगवान की दी हुई परिस्थिति में उसके तद्रूप होकर दूसरे के कल्याण में खोये हुये उनके पावनकर भाव को देखने की बजाय मैं इन पर अपने प्रति श्रद्धा और पूज्य भाव आरोपित करता रहा, जिससे मेरा अहंकार और अंधापन और अधिक बढ़ता गया।

माँ प्रातः ठीक पाँच बजे हमारे घर के मन्दिर में, मेरी पूजा में सम्मिलित होने के लिये आ जाते। यदि मोटर किसी दिन खराब हो गई तो साईकिल पर आ जाते। आँधी, तूफ़ान, वर्षा, कुछ भी हो, यह मन्दिर में पूरे पाँच बजे पहुँच जाते। यदि यह सरकारी काम से सौ मील की दूरी तक भी कहीं जाते, तो सुबह की पूजा में शामिल होने के लिये रात तक वापस आ जाते, चाहे अगले दिन दुबारा इन्हें उसी जगह क्यों न जाना पड़े। कई बार तो ऐसा भी होता कि हम सोये रहते परन्तु यह हमारे जागने से पहले ही पूरे पाँच बजे आकर मन्दिर में बैठ जाते। हमारा चौकीदार इनके आने पर बाहर का दरवाज़ा खोलता था। कई बार तो वह भी सोया रह जाता और इन्हें बन्द दरवाज़े को उलाँघ कर मन्दिर में आना पड़ता। मैंने यह जानकर भी चौकीदार को कभी नहीं डाँटा।

आज मैं यह जानता हूँ कि यह तो मेरे सद्गुरु की मुझ पर अपार कृपा ही थी कि उन्होंने मुख से नहीं, अपने जीवन की उपमा से साधक के लक्षण मेरे सामने धरे। मैं उस समय यह न देख सका, क्योंकि मेरे अहं भाव ने मुझे अंधा बना दिया था। मैं इनके जीवन में यह सब देखकर, उससे अपनी श्रेष्ठता का भाव ही बढ़ाता गया। आज मैं यह देख रहा हूँ कि माँ के उस पल के सारे चिन्ह तो अहं अभाव, संग रहितता, अपने प्रति नितान्त उदासीनता के थे।

माँ की अपनी पूजा और भक्ति का प्रवाह तो 'उर्वशी' का प्रवाह है जो गंगा के प्रवाह की तरह उनके घर अपने मन्दिर में निरन्तर बहता था। मेरे घर में, मेरे मन्दिर में उनको आने की क्या आवश्यकता थी? "उसको भेजा राम ने..." इसलिए इसी भाव में रहते हुए, मेरी माँग के तद्रूप हो मेरी सेवा चाकरी करना उनके लिये राम का आदेश था। यह तो उनके जीवन में पूर्ण भक्ति का प्रमाण था। अहंकार ने मुझे अंधा बना दिया था। इतना ही नहीं कि मैं यह देख ही न सका, बल्कि उलटा इस अहंकार की भी पुष्टि करता गया कि मुझमें ही कोई श्रेष्ठ गुण है, जो माँ इस विध यह सब कर रहे हैं। आज की मेरी यह समझ भी केवल सद्गुरु की कृपा का ही प्रसाद है...❖

- परम पूज्य माँ

अर्पणा

समाचार पत्र

अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन,
करनाल, हरियाणा
२६ अगस्त २०१४

अर्पणा - विस्तृत परिदृष्य

उर्वशी ललित कला अकादमी

२८ जून को, करनाल में, अर्पणा की उर्वशी ललित कला अकादमी ने, अपने ग्रीष्मकालीन समापन समारोह का आयोजन किया - जहाँ शास्त्रीय एवं आधुनिक नृत्य और संगीत का सम्मिश्रण था। यहाँ जून के महीने के दौरान छात्रों द्वारा सीखी गई प्रतिभाओं का प्रदर्शन किया गया।

श्री एस. पी. चौहान, कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं NEFCO के अध्यक्ष के शब्दों में, 'आज तक मैंने जितने भी कार्यक्रम देखे हैं, यह अपनी तरह का सबसे बेहतरीन कार्यक्रम है।' छात्रों की ऊर्जा, प्रतिभा, उत्साह और कौशल उनके समर्पित शिक्षकों के लिए महान प्रशंसापत्र थे, विशेष रूप से श्री कृष्ण अरोड़ा, निर्देशक तथा सुश्री कृपांजलि दयाल एवं श्री मनदीप सिंह, जिन्होंने क्रमशः अकादमी के नृत्य एवं संगीत पहलुओं का आयोजन किया।

एलिज़ाबेथ लिडेल की याद में...

अर्पणा परिवार एलिज़ाबेथ लिडेल को सम्मान, स्नेह और कृतज्ञता के साथ याद करता है, जिनका २८ मई २०१४ को देहान्त हो गया था। १९९४ में अर्पणा चैरिटेबल ट्रस्ट, यू.के. की स्थापना हुई। तब से ही वह, उसकी मुख्य कार्यकारी थीं, जहाँ उन्होंने वर्षों तक अर्पणा की सेवा गतिविधियों के लिए धन जुटाने का कार्य किया।

उन्होंने अर्पणा यू.के. के अध्यक्ष, डॉ. रघु गैंद, के साथ उत्तर भारत के अत्यधिक ग़रीब लोगों के लिए काम किया, जहाँ उनका उत्साह, चतुर निर्णय तथा दुर्जेय तप देखते ही बनता था।

दिल्ली

सीबीएसई १०वीं एवं १२वीं कक्षाओं के बोर्ड परिणाम

२० जून को, झुग्गी पुनर्वास कॉलोनियों में से अर्पणा छात्रों की उपलब्धियों को मनाया गया और वहाँ के समर्पित शिक्षकों और स्वयंसेवकों को भी सम्मानित किया गया।

- सभी ४२ बच्चे १०वीं बोर्ड परीक्षा में उत्तीर्ण हुए, ९३% ने प्रथम श्रेणी अंक प्राप्त किये।
- ३४ छात्रों ने अपनी १२वीं बोर्ड परीक्षा उत्तीर्ण की, जिसमें से ६८% छात्रों ने प्रथम श्रेणी अंक प्राप्त किये।
- पवन ने अंग्रेज़ी और बिज़नेस स्टडीज़ दोनों में ९५% अंक प्राप्त किये। सोनम ने अपने राजनीति विज्ञान की परीक्षा में ९४ अंक एवं इतिहास में ९० अंक प्राप्त किये।

अवीवा लाइफ इंश्योरेंस, भारत के मानव संसाधन के प्रमुख, श्री अमित मलिक, और श्री जयराम रामनाथन, कॉर्पोरेट कम्युनिकेशन के उपाध्यक्ष, क्रमशः प्रमुख एवं सम्मानित अतिथि थे।

२००५ से, अवीवा लाइफ इंश्योरेंस ने, अर्पणा को स्कूल-पूर्व की कक्षाओं के लिए काफ़ी योगदान दिया है, जिससे अत्यधिक ग़रीब वर्ग के ५० बच्चों की सीमित सुविधाओं को सक्षम करते हुए ३५० बच्चों तक विस्तार किया गया है। यहाँ पर बच्चों को पालने के साथ साथ खेलों और कहानियों के माध्यम से शिक्षा से अवगत कराया जाता है।

श्री राम सेंटर में देशभक्ति प्रदर्शन

१० जून को देशभक्त नेता जी सुभाष चन्द्र बोस पर एक नाटक का मंचन किया गया जिसमें अर्पणा से ४० छात्रों ने भाग लिया। इसके निर्देशक थे श्री राकेश शर्मा एवं सुश्री मीनाक्षी जिन्होंने सरकार की साहित्य कला परिषद् से गर्मियों की कार्यशालाओं का आयोजन किया।

हरियाणा

विकलांगों के लिए जागरूकता

विकलांग व्यक्ति पूर्वाग्रहित सामाजिक कलंक से व्याप्त होते हुए मौन में ही इस बहिष्कार को झेलते हैं। समुदाय को विकलांगता के मुद्दों से जागरूक करने के लिए हरियाणा के मेघा नगला गाँव में १ मेले का आयोजन किया गया। विकलांग बच्चों ने अपने साथियों के साथ मंच पर प्रदर्शन किया। विकलांग महिलाओं ने खेलों एवं प्रश्नोत्तरी में भाग लिया और स्टॉल भी लगाये। अर्पणा टीम ने लिंग-भेद पर एक संवेदनशील नाटक प्रस्तुत किया। लगभग ५०० ग्रामीण लोग अपने विकलांग साथियों की आकांक्षाओं एवं चुनौतियों के विषय में जागरूक हुए।

विकलांग बच्चों को प्रशिक्षण

सी बी एम, इंडिया, भारतीय विकास एवं राहत कोष, टाइज़ फाऊँडेशन, यू.एस.ए के टॉम एवं बारबरा सार्जेंट और बैजनाथ भण्डारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट, का हरियाणा में स्वास्थ्य/विकास कार्यक्रमों में उदार समर्थन के लिए अर्पणा अत्यन्त आभारी है।

अर्पणा अस्पताल

मैडिकल शिविर

एक स्त्री रोग शिविर का ६ मई को आयोजन किया गया जहाँ अर्पणा के डॉकटरों ने ८२ सरकारी ग्रामीण स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं एवं अन्य ग्रामीण महिलाओं के साथ बीमारियों, उनकी रोकथाम और प्रबन्धन पर चर्चा की।

हड्डी रोग शिविर - मीनाक्षी अस्पताल के संयोंजन के साथ अर्पणा के डॉ. लोकेश चराया ने ७ मई को असंध में ८५ मरीज़ों के साथ एक ओर्थो क्लीनिक का आयोजन किया। ऐसे क्लीनिक अब सप्ताहिक आधार पर आयोजित किये जायेंगे।

एक गर्भाशय ग्रीवा और स्तन कैंसर शिविर का २३-२४ मई को एशिया इनिस्येटिव के सहयोग से अर्पणा अस्पताल द्वारा आयोजित किया गया। डॉ. इला आनन्द, FRCOG, डॉ. कविता रानी, स्त्री रोग विशेषज्ञ और डॉ. विवेक आहुजा, सर्जन, द्वारा उचित दरों पर स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करने के लिए इसका आयोजन किया गया। सभी १६२ रोगियों के लिए चिकित्सक परामर्श, पंजीकरण, FNAC और पैप स्मीयर निःशुल्क थे। १८ स्त्रियों का मैमोग्राफी परीक्षण, ३७ का अल्ट्रासाउंड और ४६ पैप स्मीयर किये गये।

मधुमेह शिविर - १५ जून को इम्पेरिया स्वास्थ्य प्राइवेट लिमिटेड के सहयोग से अर्पणा अस्पताल में मधुमेह की जागरूकता एवं निःशुल्क मुधमेह जाँच शिविर का आयोजन किया गया, जिसका संचालन डॉ. आर. आई. सिंह एवं डॉ. दिनेश कुमार धीमान ने किया। शर्करा के स्तर की जाँच की गई और आने वाले ४० रोगियों में से ९ को मधुमेह से ग्रसित पाया गया।

विश्व जनसंख्या दिवस पर स्त्री रोग शिविर - १९ जुलाई को कैरवाली गाँव में अर्पणा अस्पताल द्वारा एक स्त्री रोग शिविर का आयोजन किया गया। डॉ. कविता ने ५१ ग्रामीण स्त्रियों के जाँच की, जिनमें से ९०% एनीमिया, वजन घटने एवं मासिक धर्म की समस्यायों से पीड़ित थीं। परामर्श के साथ साथ रोगियों को निःशुल्क फोलिक एसिड, कैल्शियम की गोलियाँ एवं अन्य औषधियाँ दी गईं।

नेत्र शिविर

अर्पणा अस्पताल द्वारा मई से जुलाई २०१४ तक, समालखा और सनौली के क़सबों में ६ नेत्र शिविर आयोजित किये गये। यहाँ ७६६ रोगियों की जाँच की गई जिनमें से ४४ को ऑपरेशन की आवश्यकता थी।

ग़रीबी रेखा से नीचे के रोगियों के लिए सस्ती कूल्हे एवं घुटने की प्रतिस्थापना

कालरम गाँव का ३२ वर्षीय किसान, संजय, बुरी तरह से कूल्हे की हड्डियों के क्षतिग्रस्त होने पर अर्पणा अस्पताल आया। १८ मई २०१४ को हड्डी रोग सर्जन डॉ. लोकेश चराया ने उसके दाएं कूल्हे का ऑपरेशन करके प्रतिस्थापित किया, जिससे वह समान्य रूप से सक्रिय हो गया। इस क्षेत्र में इस प्रकार का यह पहला ऑपरेशन था।

३० मई को डॉ. लोकेश चराया ने सफलतापूर्वक एक घुटने की प्रतिस्थापना की, जिसके बाद रोगी दर्द से मुक्त हो कर साधारण जीवन जीने में सक्षम हो गई।

आँखों के कार्यक्रमों में सहयोग एवं अर्पणा अस्पताल में ग़रीब मरीज़ों के लिए सब्सिडी देने के लिए अर्पणा, सीबीएम इंडिया एवं बैजनाथ भण्डारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट का अत्यंत आभारी है।

हिमाचल

अर्पणा स्वास्थ्य देखभाल और डायग्नोस्टिक सैन्टर, डलहौज़ी में निःशुल्क शिविर

एक चिकित्सा जाँच शिविर का ५-६ जून को अर्पणा अस्पताल मधुबन से डॉ. आर. आई. सिंह द्वारा आयोजन किया गया जिसमें १११ रोगियों की जाँच की गई।

एक कार्डियोलोजी शिविर का दिल्ली से आये डॉ. अनिल डल द्वारा ३-४ जुलाई को आयोजन किया गया जहाँ १२७ रोगियों की जाँच की गई। उनमें से ३१ हृदय रोगी पाये गये।

श्री संदीप कदम, डी सी चम्बा, मुख्य अतिथि थे। अर्पणा अस्पताल से डॉ. अजय चौधरी, एम एस, एम्पेरिया के डॉ. सजल सेन और अर्पणा के बकरोटा केन्द्र के प्रमुख, डॉ. सी बी पी सिंह भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

त्वचा रोग एवं दंत चिकित्सा शिविर भी २५ एवं २६ जुलाई को आयोजित किये गये। चम्बा क्षेत्र में त्वचा विशेषज्ञ उपलब्ध नहीं हैं। डॉ. अनीश राय, त्वचा विशेषज्ञ ने ६४ रोगियों की जाँच की एवं डॉ. शालिनी राय, दंत विशेषज्ञ ने २८ रोगियों का इलाज किया।

किसान कलबों के लिए कम ब्याज दरें

जटकारी क्षेत्र में, २२ मई को, सरकार (नाबार्ड) एवं स्थानीय बैंकों द्वारा चलाये गये कार्यक्रम के अंतर्गत ११ नये किसान कलब शुरु किये गये, जहाँ पशु पालन में सुधार के लिए कम ब्याज दरों पर उधार देने की व्यवस्था की गई। जून १० को, अर्पणा के मूल लक्ष्य में से १३ किसान कलब शुरु किये गये।

पशु एवं जागरूकता शिविर

आजीविका के लिए प्रयुक्त पशुओं की बेहतर देखभाल में सक्षम करने के लिए अर्पणा ने ८ जुलाई को बालका गाँव, चम्बा में शिविर का आयोजन किया, पशुपालन विभाग चम्बा एवं पशु चिकित्सा अस्पताल, खजियार से अधिकारियों ने पशुपालन के मुद्दों पर बातचीत की। पशुओं के लिए निःशुल्क दवाइयाँ भी वितरित की गईं।

बैजनाथ भण्डारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट, नई दिल्ली, टाइडज़ फाऊँडेशन एवं टॉम और बारबरा सार्जेंट यू.एस ए. के हम अत्यंत आभारी हैं। जिन्होंने हिमाचल प्रदेश में इन स्वास्थ्य और विकास कार्यक्रमों के लिए हमें सक्षम किया।

Your assistance is needed to continue these programmes:

Arpana Trust and Arpana Research & Charities Trust are Both approved under Section 80G of the Income Tax Act, 1961, giving 50% tax relief for donors in India.

FCRA Registration No. for Arpana Trust is 172310001

FCRA Registration No. for Arpana Research & Charities Trust is 172310002

Send your contribution for dissemination of humane values & medical and community welfare services in Delhi to: **Arpana Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132 037**

Send your contributions for health & development services in Haryana & Himachal to: **Arpana Research & Charities Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132 037**

Tel: 91-184-2380801, Fax: 91-184-2380810, at@arpana.org and arct@arpana.org

Please let us know by email or telephone, whenever you transfer funds to Arpana.

Mr. Harishwar Dayal, Executive Director of Arpana. Mobile: +91-9818600644

Mrs. Aruna Dayal, Director Development Mobile +91-9896242779, +91-9873015108